आभार : डा. देश दीपक

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

हास्य-विनोद अंक

www.kissekahani.com

मार्च १९६६

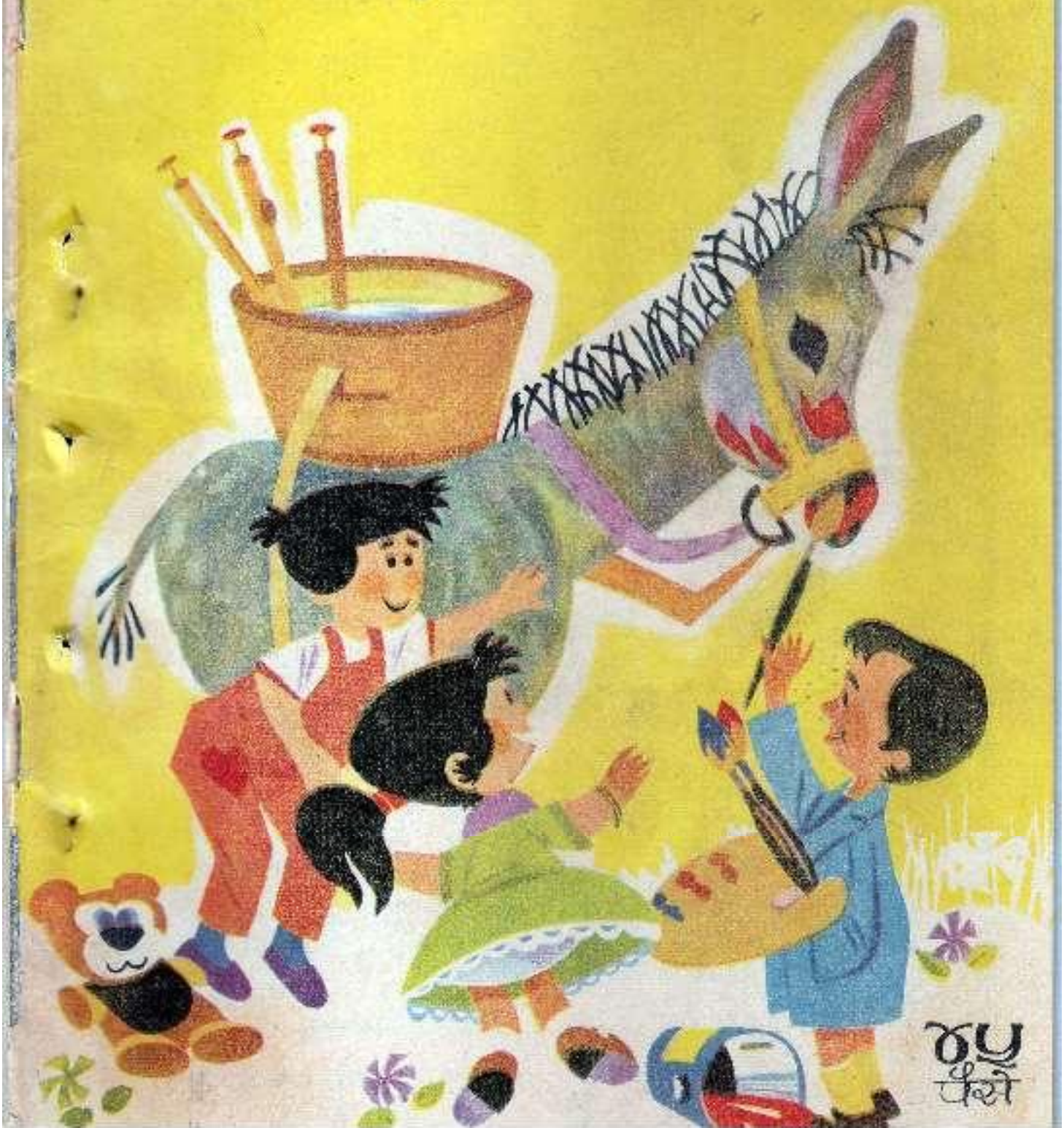

४५ पैसे

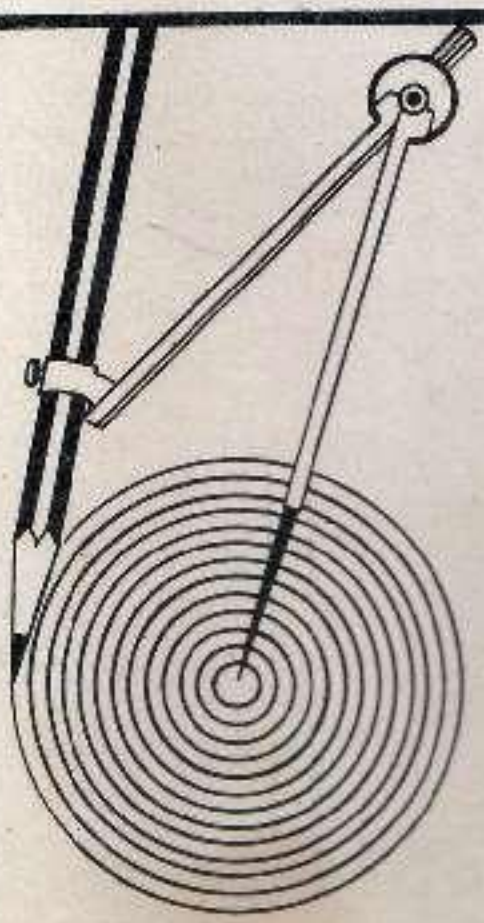

निरीक्षण

किया हुआ प्रयोग करें

वैन्डर ®

उत्तम पैन्सिल शार्पनर

सुन्दर आकार में बना हुआ वैन्डर शार्पनर सुविधा से पैन्सिल की नोक को, प्रकार की नोक के समान बनाता है।
ड्राफ्टमैनों, आर्टिस्टों तथा विद्यार्थियों की प्रथम पसन्द।

निर्माता :-

सुरेन्द्रा प्राडक्टस कम्पनी

नई दिल्ली-८

एक मात्र वितरक :-

ब्रिटेन एन्ड कम्पनी

११५, चान्दनी चौक, दिल्ली-६

समस्त भारत में प्राप्य।

प्यारे बच्चो,

उन्नीस महीने ही बीते थे कि यह दूसरा वज्रपात हम सबपर हुआ। हमारे देशके सर्वप्रिय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ११ तारीख की सुबह को १ बजकर ३२ मिनिट पर हमें हमेशा हमेशाके लिए छोड़कर चले गए। 'पराग'-परिवार अपने शोकको तुम्हारे साथ बांटना चाहता था, किंतु हमारे हाथ बंधे हुए थे। दस जनवरीको 'पराग' का फरवरी '६६ का अंक छप चुका था। अगले यानी मार्च अंकको हास्य-विनोद अंकके रूपमें निकालनेकी हमारी पूर्व योजना थी। इसी लिए उस तारीख तक 'पराग' के प्रायः सभी पृष्ठ प्रेसमें जा चुके थे।

श्री लालबहादुर शास्त्रीके इस आकस्मिक निधनसे जो शोकके बादल सारे देशपर छा गए हैं, उन्हींमें 'पराग' भी डूबा हुआ है। अपने छोटेसे प्रधानमंत्रित्व कालमें श्री शास्त्रीने बच्चों और बड़ों सभीका मन मोह लिया था। उनके प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करनेके लिए 'पराग' का अप्रैल अंक 'लालबहादुर शास्त्री अंक' होगा, जिसमें श्री लालबहादुर शास्त्रीके बचपनसे लेकर उनके दिवंगत होने तकको सभी सफलताओंका बाल-सुलभ सचित्र ब्योरा होगा। मुखपृष्ठ तथा बीचके पृष्ठोंपर उनके भव्य रंगीन चित्र होंगे।

तुम्हारे :
संपादक दादा

इस अंक में

मुखपृष्ठका चित्र—

होलीका गधा : पांडे : १

मजेदार कहानियां —

● लुत्फ़ीलाल की होली : दीप : ८ ● रंगोंकी दावत : गुरदीपसिंह : १२ ● एक तवेकी रोटी : रेवादास : १५ ● शाही शान : मनोहर वर्मा : १६ ● गोलियोंका चमत्कार : गयासअहमद गद्दी : २० ● हवाई हमला : अवतारसिंह : ४० ● सबसे बड़ा मूर्ख : सुरजीत : ४४

चटपटी कविताएं—

● होली है, भई होली है : बम्बहादुर सिंह 'सरस' : ४ ● मैं जोकर हूं : गंगासहाय 'प्रेमी' : ११ ● काकी चिड़ियाघरमें : विद्याभूषण विभु : ५१ ● बिल्लीका इलाज : कुमारी इंद्रा : ५२ ● नटखट बबू : नारायण प्रसाद अग्रवाल : ५२ ● मिस्टर बंदर : चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक' : ५३ ● ऊंट की लात : मंगलराम मिश्र : ५३

मनोहर कार्टून कथाएं—

● छोटू और लंबू : शेहाब : २४ ● हप्पूका हुड़दंग : पांडे : ३२

धारावाही उपन्यास—

● बुद्धूमलके कारनामे : निकोलाई नोसोव : २८

अन्य रोचक सामग्री—

● महापुरुषोंके हास्य-विनोद : हरिश्चंद्र सिंह : १९ ● मिथिलाके बीरबल : शैलकुमारी : ३५ ● बूझने वाली पहेलियां : रामनारायण उपाध्याय : ३९ ● मनोरंजक प्रश्नोत्तर : इंद्रजीत : ४७ ● बोलो तो जानें : शांतिलाल अग्रवाल : ५५

स्थायी स्तंभ—

● कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक : ६ ● दुबली-पतली परेशानियां : मेहताब किरण : २२ ● खेलकूद—फुटबाल की कहानी—३ : हरिमोहन : २६ ● छोटी छोटी बातें : सिम्स : ३१ ● खिलौनाका डिब्बा : अरुणकुमार : ५६ ● रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४७ : ५९

पराग

हास्य-विनोद अंक
मार्च १९६६
९७वां अंक

होली है! भई, होली है! बच्चों की यह टोली है!

www.kissekahani.com

होली है!

हाथों में पिचकारी है,
होली की तैयारी है;
सब पर रंग चलाते हैं,
नहीं तनिक भय खाते हैं!

सब की मीठी बोली है,
लगी भाल पर रोली है।
खूब इन्हें आजादी है,
आज इन्हीं की चांदी है।

बड़े सभी ये नटखट हैं,
बड़े सभी ये चटपट हैं;
किसे नहीं ये प्यारे हैं,
मां के राजदुलारे हैं!

छोटे छोटे बच्चे हैं,
अभी अक्लके कच्चे हैं;
बाल सभी के काले हैं,
सुंदर औ घुंघराले हैं!

होली है भई होली है! बच्चों की यह होली है!

बालक क्या हैं बंदर हैं,
एक एकसे बढ़कर हैं!
नटखट हैं ये चंचल हैं,
इनसे बचना मुश्किल है!

होली बड़ी निराली है,
कहां नहीं खुशहाली है!
ऋतु बसंत में आती है,
'प्रेम करो' बतलाती है!

—बम्बहादुरसिंह 'सरस'

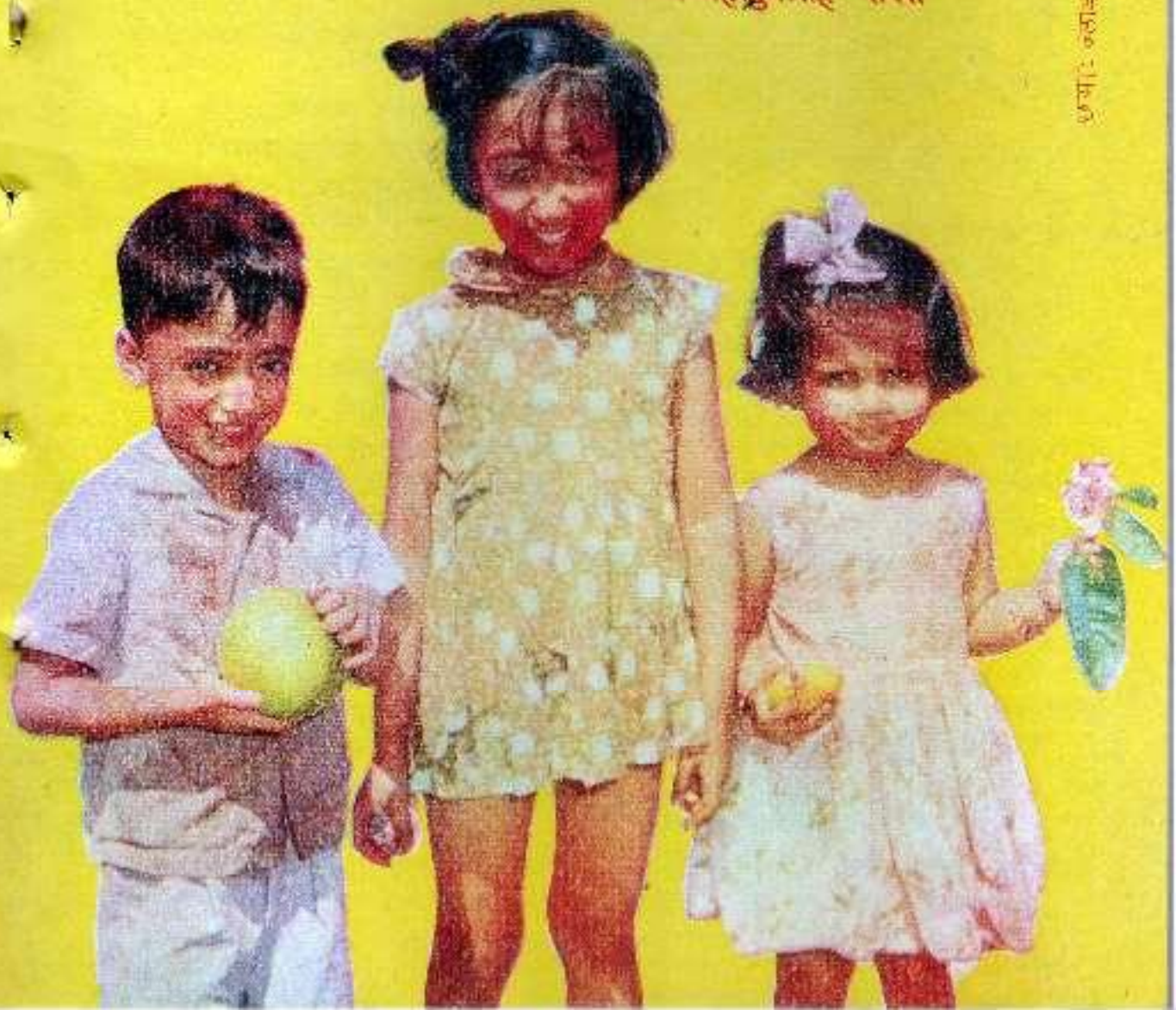

फ़ोटो : ओमप्रकाश

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

निर्मलाकुमारी तोदी, बम्बई–१६ :

लड़कियोंकी चोटी और पहाड़ोंकी चोटीमें क्या अंतर है?

लड़कियोंकी चोटियां पकड़कर पहाड़ोंकी चोटियां चढ़ी जा सकती हैं, पहाड़ोंकी चोटियां पकड़कर आसमान-में नहीं चढ़ा जा सकता!

शरद चांडक, नागपुर :

अगर नभमें बादल न होते, तो क्या होता?

वर्षा जमीनसे आसमानकी ओर हुआ करती!

सुनील परिहार, हरदोई :

आदमी यदि जानवर है, तो उसके दुम क्यों नहीं होती?

दुमने अपनी खैर मनाई—होती भी, तो वह उसे ऑपरेशनसे साफ करा देता!

विनोदकुमार जैन, दिल्ली–६ :

बच्चा पैदा होते ही रोता है, हंसता क्यों नहीं?

क्योंकि वह तब तक 'पराग' का हास्य-विनोद अंक नहीं पढ़ पाता!

कमलकुमार जोशी, अल्मोड़ा :

क्या कारण है कि जब हम नाटक देखते हैं, तो आगे बैठनेकी सोचते हैं, परंतु सिनेमा देखनेमें पीछे?

क्योंकि नाटकके पात्रोंसे रोशनी छनकर नहीं निकलती!

देवानंद मधुकर, हथुआ, सारण :

मैं देख रहा हूं कि पुरस्कार पानेके लिए प्रश्नोंके अटपटा होनेसे जरूरी उत्तरका चटपटा होना हो गया है। तब उत्तर देने वाला ही क्यों नहीं ले लेता पुरस्कार?

क्योंकि चाटको चटपटी करनेके लिए गरम मसाला जरूरी होता है— जीभ चटपटी करनेके लिए खालिस गरम मसाला कोई नहीं फांकता!

सुरेंद्रप्रकाश अग्रवाल, राठ, हमीरपुर :

मनुष्य पेटको अपना, लेकिन पीठको पराई क्यों मानता है?

सुस्त बच्चोंका ही पेट अपना और पीठ पराई होती है!

अरुणकुमार जैन, मेरठ शहर :

पाजामेके नेफेमें और लड़ाईवाले नेफामें क्या अंतर है?

एकमें चींटी घुसपैठ कर सकती है, दूसरेमें चीनी!

सुभाषचंद्र सक्सेना, लश्कर :

क्या आप चुल्लू भर पानीमें डूबकर मरने की विधि बता सकते हैं?

क्यों नहीं—मुंह सी लो, चुल्लू भर पानी नाकमें चढ़ा लो और उसे तब तक रोके रखो जब तक दम न निकल जाए! छींकना मना है!

कामताप्रसाद पटेल, भिलाई नगर :

बिजलीके बिल और चूहेके बिलमें क्या अंतर है?

बिजलीके बिल भी चूहोंके बिलमें ही मिलने लगें, तो कोई आश्चर्य नहीं!

राजीव उपाध्याय, सांगली :

अगर आपकी दाढ़ीके बाल सोनेके और मूंछों के बाल चांदीके होते, तो क्या होता?

तो देशकी अर्थ-व्यवस्था इतनी बेडौल न होती!

त्रिलोचनसिंह रत्रा, ग्वालियर–६ :

स्वर्ग-नरक जानेके लिए विमान सेवा कब चालू होगी?

आजकल भी काफी विमान स्वर्ग-नरक पहुंचाते हैं—लोग गलतीसे इस सेवाको दुर्घटनाका नाम दे देते हैं!

प्रदीप कटकवार, नागपुर :

कहते हैं 'चोरकी दाढ़ीमें तिनका'—अगर चोर बच्चा हो, तो?

तिनका ठोड़ीसे ही चिपका दिखाई देगा!

विजयमोहन सक्सेना, बीकानेर :

अकलके घोड़े किस गतिसे दौड़ते हैं और कब?

सबसे तेज गति तब होती है जब 'अक्ल हवा हो जाती है!'

दौलतसिंह गुर्जर, अहमदाबाद :

खानेके बाद ही डकार क्यों आती है, पहले क्यों नहीं आती?

क्योंकि पेटमें उस समय उसका स्थान हथियानेके

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१

लिए कुछ और नहीं पहुंच पाता!

यतीन्द्रकुमार जौहरी, लखीमपुर-खीरी :

हंसी-मजाक करनेकी सीमा कहां तक होती है?

जहां वह बजाए गुदगुदानेके काटने लगती है!

जवाहरलाल श्रीवास्तव, वाराणसी :

हमें छींक क्यों आती है?

नाकके भीतर बाहरी घुसपैठियोंकी कार्रवाईके कारण!

श्यामकुमार लालवानी, कांकेर (बस्तर) :

आप अपनी दाढ़ी एवं मूंछोंको सुरक्षा कोषमें क्यों नहीं भेज देते, ताकि उनसे जवानोंके लिए कम्बल आदि बन सकें?

हमारे जवानोंको घुसपैठियोंकी दाढ़ियोंके कंबल ज्यादा आराम देते हैं!

★ कुमारी कल्पना मिश्र, द्वारा रामभरत मिश्र, जिला उद्योग पदाधिकारी, हरमू रोड, रांची (बिहार) :

देशके लिए जो जेल जाता है उसका सम्मान होता है, जबकि चोरीके अपराधमें जो जेल जाता है उसका अनादर होता है—क्यों?

क्योंकि जेलमें मिलने वाला भोजन-कपड़ा देशका होता है, चोरीका नहीं!

रमेशकुमार जैन, बम्बई-७८ :

क्या सोचकर परछाईं अंधेरेमें मनुष्यका साथ छोड़ देती है?

कि मनुष्य अंधकारमें केवल अपनेपर भरोसा रखे!

कुमारी सुमित्रा, रायरंगपुर, मयूरभंज (उड़ीसा):

बेकारीकी समस्या किस प्रकार हल की जा सकती है?

कार खरीदकर!

कलाराम देवागन, दुर्ग :

हमारे देशके बच्चे अमरीकासे मंगाए गए दूधके बलपर जिंदा रहते हैं। बड़े होनेपर वे भारत माताकी जय बोलेंगे या अमरीकाकी?

जय खूनके कारण बोली जाती है कि दूधके कारण?

★ सुभाषचंद्र गुप्ता, द्वारा डा. एम. एल. गुप्ता, कौशलकुंज, पालबीचला, अजमेर (राज.) :

कहा जाता है कि गड़े मुर्दे मत उखाड़ो। फिर हमें इतिहास क्यों पढ़ाया जाता है?

यह जाननेके लिए कि मुर्दे गड़े-गड़ाए पड़े हैं या उठ कर आजके इतिहासका बंटाधार करनेमें जुट गए!

भोजराज मेहता, मद्रास-१ :

आत्महत्या सबसे बड़ा पाप क्यों है?

क्योंकि असामी अपने लेनदारोंको बेवकूफ बना देकर तीर हो जाता है!

राजकुमार बहल, मरठ छावनी :

अंडे और डंडेमें क्या अंतर है, जबकि खानेमें दोनों गरम होते हैं?

अंडेसे पेट-पूजा होती है, डंडेसे पीठ-पूजा!

अनिलकुमार दुबे, छिन्दवाड़ा :

चपत खाने और चपाती खानेमें क्या अंतर है?

चपाती गालको भीतरसे फुलाती है, चपत बाहरसे! ●

पाठकों से

अखबारी कागजकी कमी दिनोंदिन विकट रूप धारण करती जा रही है। इस कारण हमें छपाईके देशी कागजका इस्तेमाल करने को मजबूर होना पड़ता है। यह कागज अखबारी कागजकी तुलनामें प्रायः दूने दाम पर मिलता है। अखबार निकालनेके काम आने वाली अन्य सामग्री की कीमत भी काफी बढ़ गई है। रहन-सहनका खर्च बढ़ जानेसे वेतन और मजदूरीमें भी वृद्धि हुई है। उत्पादनकी लागतमें हर तरफसे विशेष वृद्धि होनेके कारण 'इण्डियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज-पेपर सोसाइटी' ने सदस्योंको कीमतों परिस्थितिके अनुरूप वृद्धि करनेकी सलाह दी है। इसका दूसरा उपाय यही होता कि या तो पृष्ठोंकी संख्या घटाई जाती या समाचार-पत्रों द्वारा पाठकोंकी जो विविधतापूर्ण सेवा हम करते हैं, उसमें हमें कमी करनी पड़ती। हमने निश्चय यह किया है कि 'पराग' की कीमत मार्चके इस अंकसे ५ पैसा बढ़ा द। इस महीनेसे 'पराग' की कीमत प्रति कॉपी ४५ पैसे होगी। —व्यवस्थापक

लुत्फन्नीलाल की होली

साथमें अपनी पत्नीको ले आएं। फिर बनकर रह जाएं अपनी जोरूके गुलाम। दोस्तोंकी महफिल लुत्फन्नीके बिना लंडूरी रह जाए और उनकी 'शैतान टुकड़ी' का एक सदस्य यों चला जाए, यह उनके खास दोस्तोंको कतई मंजूर नहीं था।

लेकिन लुत्फन्नीलालको तो ससुरालकी धुन भूत जैसी सवार थी। मनमें उमंग थी, सो एक रातके अंधेरेमें वह ससुरालको रवाना हो गए।

www.kissekahani.com

लुत्फन्नीलालने जब जब ससुराल जानेकी तैयारी की, तब तब उनके लंगोटिए दोस्तोंने अड़ंगे लगाए। कभी धोबीको चकमा देकर उनके कपड़े अटकवा दिए, तो कभी मुहूरत न होनेके पचड़े खड़े किए। एक बार तो उनके कपड़े कोयलेसे रंग दिए और मिठाई लूट ली। कारण बहुत बड़ा था। दोस्त लोग नहीं चाहते थे कि लुत्फन्नीलाल ससुराल जाएं, लौटकर आएं, तो रास्तेकी मुसीबतोंको झेलते-झालते ससुरालके गांव पहुंचे। चलते चलते थककर चूर हो चुके थे और हुलिया भी ऊपरसे लेकर नीचे तक बदरंग हो चुकी थी। वह एक पेड़के नीचे सुस्ताने बैठ गए।

होलीका हंगामा था। लुत्फन्नीलाल बैठे ऊंघ रहे थे, उसी समय गांवके कुछ लड़कोंने अपनी करामात आजमाई। अचानक ही लुत्फन्नीलालको

लगा कि उनके सिरपरसे कोई बोझा उतार ले गया है।

चौंक उठे। हाथ फिराया, तो सिरपरसे टोपी साफ थी। अचानक ऊपर देखा। पेड़पर दो लड़के बैठे थे। उनकी टोपी उन बंदरोंके पास थी। उन्होंने हुंकार भरी: "ओ बंदरोंकी दुम! जरा नीचे तो आओ, नानी याद करा दूंगा, नानी!"

एक लड़केने दूसरेसे कहा, "देखो, नत्थू, यह मेंढक तो टर्राता भी है!"

कहा, "अमां, संभलके, कहीं नीचेके बदले ऊपर न पहुंच जाना। जाना भी तो कमसे कम हमें एक चवन्नी देकर और अपनी यह टोपी लेकर, हां!"

लुत्फन्नीलालने रोषसे कांपते हुए कहा, "यह क्या बदतमीजी है। सीधेसे टोपी दे दो, वरना एक एकको चोरीके इल्जाममें जेल भिजवाऊंगा, कोड़ोंसे पिटोगे, कोड़ोंसे!"

नत्थूने बंदरोंकी तरह दांत किटकिटाए।

लुत्फन्नीलाल ताव खा गए। धोती कस ली, आस्तीनें चढ़ा लीं और पेड़पर चढ़ने लगे। इधर यह पेड़पर चढ़े, उधर नत्थू, मिट्ठू बंदरोंकी तरह एक डालसे दूसरी डाल होते हुए नीचे आ पहुंचे।

लुत्फन्नीलाल तावमें पेड़पर चढ़ तो गए, लेकिन उतरते वक्त जहां पैर रखते, वहींसे फिसलते। उनका तो रोआं-रोआं कांप उठा। मिट्ठूने

मिट्ठूने लापरवाहीसे कहा, "अरे जा, जानता नहीं होली है, होली! हमें चंदेकी चवन्नी दे दो और अपनी टोपी ले लो। ज्यादा चीं-चपड़ करोगे, तो टोपीका चिथड़ा मिलेगा, कहे देते हैं!"

लुत्फन्नीलाल माने नहीं, बोले, "चवन्नी लोगे... हा-हा-हा... एक छदाम भी नहीं दूंगा, कोई अंधेर है। कान खोलकर सुन लो, टोपी सही सलामतीसे छोड़ दो, वरना एक एककी हुलिया बिगाड़ दूंगा।"

नत्थू और मिट्ठूका इरादा किसीको नुकसान पहुंचानेका नहीं था। वे तो चंदा जुटानेके लिए यह तरकीब काममें लाते थे। सीधे सीधे कोई चंदा देता नहीं था, सो वे पेड़पर चढ़कर बैठ गए थे। मजबूत धागेमें मछली फांसनेका कांटा लगा हुआ था, जिसे उधरसे गुजरने वाले लोगोंकी टोपीमें अटका देते थे। इस तरह टोपी उनके कब्जेमें होती थी। बेचारा राहगीर अपनी टोपीके बदले चुपचाप चार आने देता और चला जाता।

उन्होंने देखा, यह लुत्फन्नीलाल तो एक ही अड़ियल टट्टू है। अकड़ इतने हैं कि एक छदाम तक देनेको तैयार नहीं। सो उन्होंने उनके जूतों और कपड़ोंकी पोटलीको कांखमें दाबा और बोले, "देखो, भाई, मामला जरा पेचदार हो गया है। पहले हम चवन्नी मांगते थे और तुम छदाम तक देनेको तैयार नहीं थे। अब हम एक रुपया मांगते हैं। अपना सामान चाहो, तो एक रुपया फेंको, वरना हम चले।"

और लुत्फन्नीलालने देखा, नत्थू और मिट्ठूने अपने कदम बढ़ा दिए हैं, तो वह सिटपिटाए, "अरे ओ . . . ठहरो, भाई. . . मैं. . . दूंगा।"

नत्थू और मिट्ठूने आपसमें नजरें मिलाईं, हंसे और फिर चल पड़े। लुत्फन्नीलालका हलक सूख गया। बाप रे, ये तो सबके सब कपड़े ले चले, मिठाई भी ले चले और ले चले साढ़े आठ रुपयेमें खरीदे जूते! कुल मिलाकर सब चालीस रुपयेका माल तो है ही। बोले, "अरे ओ कम्बख्तो. . . मैं एक रुपया दूंगा यहां तो आओ।"

मिट्ठूने कहा, "नामसे पुकारो, नामसे। मेरा नाम मिट्ठू, इसका नाम नत्थू। लाओ फेंको रुपया।"

मुसीबत है। लुत्फन्नीलाल उलझनमें पड़े। रुपये जेबमें नहीं हैं, पोटलीमें बंधे हैं। पोटलीमें होनेकी बात कह भी नहीं सकते, वरना ये सब गड़प कर जाएंगे। बोले, "दूंगा, भाई, दूंगा, पोटली तो दो।"

नत्थूने कहा, "बच्चू, यह चकमा किसी औरको देना। पहले पैसा, फिर माल!"

लुत्फन्नीलालकी परेशानीका अंत नहीं हो रहा था। तरकीब भिड़ा ही रहे थे कि वहां आ गई रंगभरी हंडियों और पिचकारियोंसे लैस लड़कोंकी टोली। मिट्ठूके इशारेकी देर थी, सभीने अपनी पिचकारियां तानीं। बेचारे लुत्फन्नीलाल हरे-लाल, नीले-पीले रंगसे सराबोर हो गए।

कुछ करते न बना, तो बुक्का मारकर रो उठे। मिट्ठू पसीज गया। रस्सीकी सहायतासे उन्हें नीचे उतारा गया।

नत्थू बोला, "अब सीधे हाथसे एक रुपया दो। और हां, भाई, तुम्हारी पोटलीसे आती मिठाई की सुगंध ने हमें बेचैन कर दिया है। मन ललचा गया है, सो मिठाई हमें दे दो।"

किस्सा कोताह यह कि मरता क्या न करता, मामला सुलझ गया। लुत्फन्नीलालको झुकना पड़ा। रुपया और मिठाई देनी पड़ी।

ससुराल-यात्रामें लुत्फन्नीलालको जितनी मुसीबतें उठानी पड़ीं, यह वही अच्छी तरह जानते हैं। अब ससुरालके करीब आकर भी मुसीबत उनके पीछे ही पड़ी रही। लेकिन वह हिम्मत हारने वाले नहीं थे।

रंगमें तर थे, सूरत बिना दुमके लंगूरकी-सी हो गई थी। पोटलीमें बंधे छोटेसे शीशेमें अपनी हुलिया देखकर उनकी तबियत हुई कि वह इतने जोरसे चिल्ला कर रोएं कि सारा गांव इकट्ठा हो जाए।

रोनेकी कोशिश की भी, लेकिन रुलाई भी ऐन मौकेपर धोखा दे गई। वह वैसे ही बैठे रह गए। भूख उन्हें लग आई थी, लेकिन पासकी मिठाई भी अब नहीं बची थी। ससुराल जानेके लिए उनके पैर न उठते थे। उठते भी तो कैसे, इस हालतमें ससुराल जाकर क्या मुंह दिखाते! मन मारकर बैठे रहे।

होलीके हंगामेका मजा ही निराला होता है—वह भी ठेठ गांवमें तो बढ़चढ़कर ही होता है। उधरसे एक टोली आ निकली। टोली नौजवानोंकी थी। लुत्फन्नीलालकी लंगूर छाप सूरत उन्होंने देखी, तो ठहर गए। लुत्फन्नीलाल चिहुंके। सबने उन्हें घेर लिया।

हवामें एक नारा गूंजा, "होलीके भोंदू आए!"

जूतोंका हार तैयार था—नए जूतोंका नहीं, फटे पुरानोंका—हार लुत्फन्नीलालके गलेमें पड़ गया। फिर लोगोंने उन्हें कंधेपर उठा लिया और बरात चल पड़ी। बरातमें जो महाशय सबसे ज्यादा जोशो-खरोश दिखा रहे थे वह लुत्फन्नीलालके साले थे। उन्होंने अपने जीजाको पहचाना नहीं था। जुलूस उनके घरके आगेसे गुजरा। लुत्फन्नीलाल ससुरालका दरवाजा

भी नहीं पहचान पाए। वह तो अपनी दुर्गतिपर बिसूर रहे थे। लेकिन ससुरने दामादको पहचान लिया।

बेचारे लुत्फ़ीलाल शरमसे गड़े जा रहे थे, जैसे चोरी करते हुए पकड़े गए हों।

मुसीबतें चाहे जितनी उठानी पड़ीं, लेकिन लुत्फ़ीलाल आखिर ससुराल पहुंच ही गए।

बेचारे नहाए-धोए, कपड़े बदले। बन-ठन कर तैयार हुए। और ठीक उस समय जब वह पूरी तरह लैस हो चुके थे, एक घड़ा काला रंग उनके ऊपर उंडेल दिया गया। बेचारे भुनभुनाकर रह गए।

अबकी बार उन्होंने सावधानी बरती। नहा-धोकर कोठरीमें घुस गए। रोशनदान बंद कर लिया, दरवाजेपर सांकल चढ़ा ली और चारपाईपर आ विराजे। तभी दरवाजेपर दस्तक हुई। चुप बैठे रहे। साली साहिबाने आवाज दी, "जीजाजी, नाश्ता लाई हूं।"

लुत्फ़ीलाल तनकर बोले, "मूर्ख किसी और को बनाना। मैं चकमेमें आने वाला नहीं।"

"यकीन मानिए।"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"वाह, जीजाजी, आप तो बड़े डरपोक हैं।"

"डरपोक हूं, यह भी कोई तलवारकी लड़ाई है। अच्छे भले आदमीको बनमानुस बना देना हिमाकत नहीं, तो और क्या है?" लुत्फ़ीलाल अकड़ गए।

"अच्छा, जीजाजी, दराजसे ही ले लीजिए। मत खोलिए दरवाजा।"

भूख तो लगी ही थी। बात उन्हें पसंद आई। थोड़ा-सा दरवाजा खोला, छाछका गिलास और एक तश्तरी थाम ली। दरवाजा बंद कर लिया और चारपाईपर आ बैठे। कोठरीमें घटाटोप अंधेरा था। टटोलकर तश्तरीमेंसे गोल गोल लड्डू उठाया। भूखका जोर था, एक बारमें ही गड़प लिया लड्डू। मुंहका चलना था, किर-किरका होना था और सारे बदनका कांप कांप उठना था! 'आक थू आक थू!' छाछका गिलास उठाया, मुंहसे लगाया, एक घूंट भरी। नमककी जगह फिटकरी मिली थी...!

गुस्सेके मारे सारा तन कांप उठा। पेटमें भूख लग आई थी, तश्तरीमें नाश्ता था, लेकिन खाते तो खाते कैसे, न जाने इन समोसोंमें क्या

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

मैं जोकर हूं

मेरे सब ठाट निराले हैं,
ये कपड़े ढीलेढाले हैं,
रंगों का इन में मेला है,
मेरा दर्जी अलबेला है,
पाजामा मेरा साथी है,
इसमें घुस सकता हाथी है!
इसके ढीलेपन के कारण,
समतलपर खाता ठोकर हूं!
मैं जोकर हूं, मैं जोकर हूं!

खुद हंसता तुम्हें हंसाता हूं,
सबकी रोटियां पचाता हूं!
कुछ काम न यहां उदासी का,
हैजे, बुखार या खांसीका,
मैं दवा हंसीकी देता हूं,
डाक्टर नहीं, अभिनेता हूं!
हंसकर तो सभी हंसाते हैं,
मैं मगर हंसाता रोकर हूं!
मैं जोकर हूं, मैं जोकर हूं!

मैं सब लोगों का प्यारा हूं,
हंसने का एक सहारा हूं!
'ही ही' हंसना या मुसकाना,
पिटना रोना या चिल्लाना,
मेरा तो सब कुछ नकली है,
हां, हंसी तुम्हारी असली है!
सब लोगों की सेवा करता,
पर नहीं किसी का नौकर हूं!
मैं जोकर हूं, मैं जोकर हूं!

मुंह मेरा रंगबिरंगा है,
ज्यों इन्द्रधनुष सतरंगा है!
असली हों चाहे बनी हुई,
मेरी मूंछें हैं तनी हुई!
मैं नहीं किसी से डरता हूं,
इसलिए न परदा करता हूं!
क्या कोई बतला सकता है,
मैं जवान या डोकर हूं!
मैं जोकर हूं, मैं जोकर हूं!

—गंगासहाय 'प्रेमी'

हास्य कहानी

रंगों की फ़बन

गुरदीप सिंह

www.kissekahani.com

मियां कल्लन!

क्या कहा? मियां कल्लनको नहीं जानते! अरे यार, वही हवाई जहाजवाले मियां!

अब आप सोच रहे होंगे कि मियां कल्लन कोई बहुत बड़े रईस होंगे, जिनके पास अपना हवाई जहाज है। उनके चेहरेपर छोटी छोटी मूंछें होंगी, काले काले घुंघराले बाल होंगे और बढ़िया टैरेलिनके कपड़े पहनते होंगे, पर सच तो यह है कि आप तस्वीर उल्टी देख रहे हैं। हमारे कल्लन मियांकी तो बस बाप-दादाके जमानेकी एक छोटी-सी पंसारीकी दूकान है नगरके एक कोनेमें और घर है दूसरे कोनेमें!

पर हालत यह है कि लोग राज्यके मंत्रीको बेशक न जानते हों, मगर शहरका हर आदमी कल्लन मियांको जरूर पहचानता है। बात ही कुछ ऐसी है।

इतना पढ़ लेनेके बाद आप सोचते होंगे, आखिर मियां कल्लनके पास ऐसी कौनसी चीज है, जिससे सारा शहर उन्हें जानता है और जिसपर कल्लन मियांको गर्व है।

आपको यह बता देनेसे पहले मैं कल्लन मियां के बारेमें थोड़ा और बता देना चाहता हूं।

कल्लन मियांके परदादा कभी अंग्रेजी सेनामें लैफ्टीनैंट थे। बहुत वीरता दिखानेपर उन्हें एक मैडल और एक साइकल इनाममें मिली। उनका सिर गर्वसे ऊंचा हो गया। उन दिनों सारे शहरमें सिर्फ उनके ही पास साइकिल थी। वह उसे सुबह-शाम साबुनसे मल मलकर धोते, तेलकी मालिश करते। रोज सुबह तेजीसे साइकिल चलाते हुए दूकान जाते, लोग देखते और मन ही मन जला करते। उनकी मृत्युके पश्चात वह साइकल कल्लन मियांके दादा और पिताकी सेवा करके अब इनके हाथ आई। अब तक उसकी हालत काफी बिगड़ चुकी थी; रंग उतर गया था, हैंडिल मुड़ चुका था और न जाने उसका क्या क्या गड़बड़ हो चुका था।

एक बात और, कल्लन मियां जैसा पेटू और बिन-बुलाया मेहमान ढूंढ़ना बड़ा मुश्किल है। जहां कहीं दावतकी बात सुनी, कल्लन मियां हाजिर और फिर डटकर पकवान खाते, खीरमें नुक्स निकालते और हलवेमें घी डलवाते! मगर ऐसा मौका कभी न आया था, जब उन्होंने किसीको

खिलाया हो। सब उनकी इस आदतसे परेशान थे और वह थे कि मानते ही न थे।

खैर, होली करीब आ रही थी। महल्लेके लड़कोंने इस बार कल्लन मियांको अच्छी तरह रंगनेकी सोची। मिठ्ठूके घर सब लड़के इकट्ठे हो गए और कोई तरकीब सोचने लगे। मिट्ठू बोला—"हममेंसे एक लड़का जाकर उन्हें बाहर बुलाए और जैसे ही वह बाहर निकलें, सब उनपर रंग फेंक दें!"

टीटूने टोका : "कल्लन मियां भी कच्ची गोलियां नहीं खेले। होलीसे एक दिन पहले वह दूकानपर ही सोते हैं और अगले दिन घर ही नहीं आते!"

सब फिर सोचने लगे।

"मिल गया, मिल गया!" बबली जोरसे चिल्लाया।

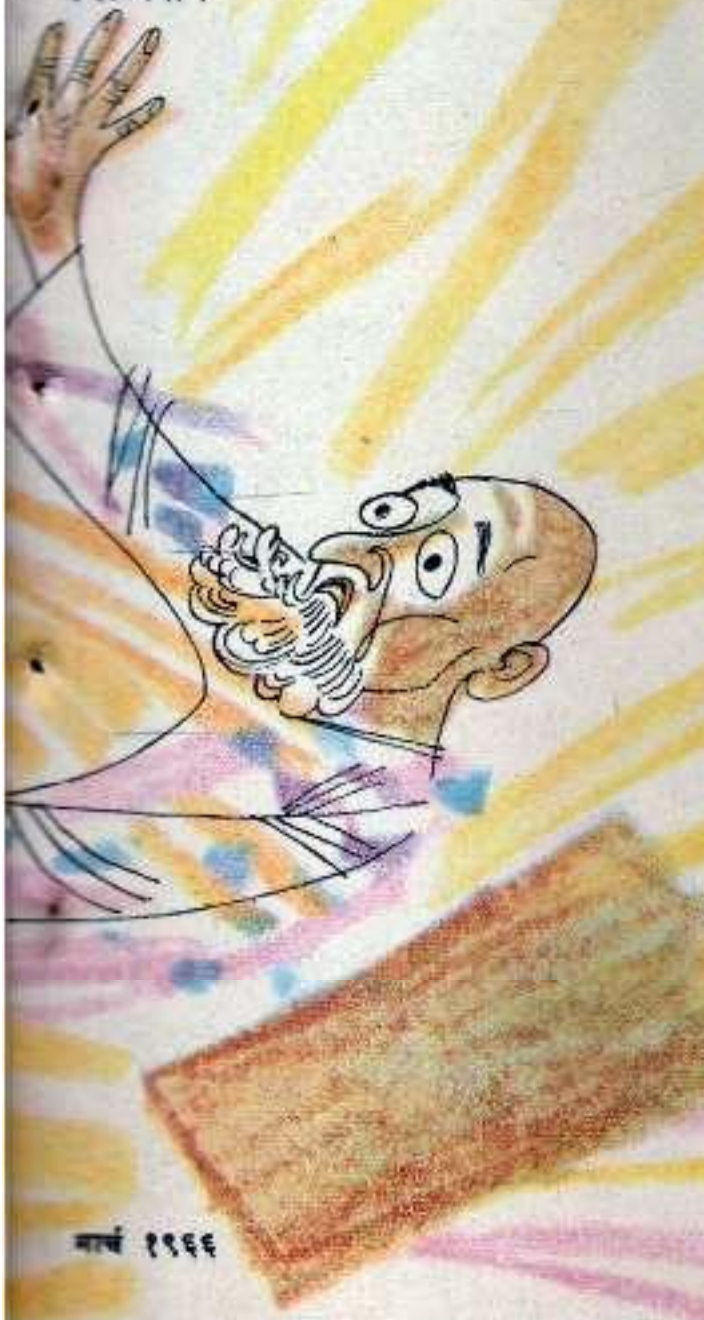

"क्या मिल गया?" सबने एक साथ पूछा।

बबलीने बताया : "कल्लन मियांको रंगनेकी तरकीब मिल गई।"

फिर उसने सिरको झटका दिया, मुंहमें उंगली दबाई और आंखें मटकाईं—जैसे कोई बहुत गंभीर बात सोच रहा हो। तब उसने अपनी तरकीब सबको बता दी। बात सबको पसंद आ गई और वे हंसते-खिलखिलाते अपने अपने घर चले गए।

होलीसे एक दिन पहले सुबह सुबह बबली कल्लन मियांके घर पहुंचा और बोला, "चाचा, इस बार तो मजा आ गया। कल ग्यारह बजे लाला दमड़ीमलके घर होलीकी दावत है, खूब मौज करेंगे!" दावत और दमड़ीमलके घर! मियां मानो जमीनसे उछले।

"दस बजे होली बंद, और फिर दावत!" बबलीने बात पूरी की। मियां कल्लनको तभी देसी घीकी भीनी भीनी खुशबू आने लगी। उनके मुंहमें पानी भर आया।

वह उस दिन दूकानपर ही सोए और जैसे ही घंटा-घर की घड़ीने दस बजाए, कल्लन मियांने नए कपड़े पहने और अपनी बिना-ब्रेककी साइकिल-की तरफ लपके, पैडिल पर पांव रखा और हवा-से बातें करने लगे।

वह साइकिलको तेजीसे घरकी ओर दौड़ा रहे थे। तभी आगे आई चौककी लाल-बत्ती, साइकिल थी तेज और ब्रेक नदारद। मियां जल्दीसे आगे बढ़ गए। सिपाहीने सीटी बजाई, पर कल्लन मियां कहां रुकने वाले थे! अब आगे आगे थे मियांजी और पीछे पीछे था सिपाही।

अचानक सड़कके बीचोंबीच एक बैल आ गया। उन्होंने साइकिल मोड़ी, मगर बैल भी मुड़ गया और कल्लन मियांकी साइकिल सीधी बैलके पेटमें जा लगी। बस साइकिल सड़कपर और वह एक तरफ नालीमें जा गिरे। उनको थोड़ी-सी चोट आई थी और नए कपड़े कई जगहसे फट गए थे। पर वह किसी तरह उठ खड़े हुए। इतनेमें पीछेसे सिपाही आ गया और उसने चालानकी पर्ची उनके हाथमें पकड़ा दी।

मियां कल्लन मानो आसमानसे गिरे और खजूरमें अटके। वह झगड़ते, मगर उधर दावतको देर हो रही थी। उन्होंने चुपचाप दस

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

साठे

बिस्कुट

इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

heros SBC-2410HIN

स्कूलका मुआयना करने इंस्पेक्टर साहब आए। वह एक कक्षामें गए। गणितकी पढ़ाई हो रही थी वहां।

"कक्षाके तीन सबसे तेज विद्यार्थियोंको बारी बारीसे बुलाइए," अध्यापकसे इंस्पेक्टरने कहा। "मैं उनकी अंकगणितकी योग्यताकी जांच करना चाहता हूं।"

एक लड़का ब्लैक बोर्डपर आया। जो सवाल उसे दिया गया, उसे उसने फौरन हल कर दिया और अपनी जगहपर जा बैठा। इसके बाद एक दूसरा आया। वह भी दिए गए प्रश्नको करके अपनी जगह बैठ गया।

फिर जो लड़का ब्लैक बोर्डपर आया वह कुछ सहमा सहमा-सा मालूम पड़ा। खड़िया लेकर वह दिए गए सवालको शुरू करने ही वाला था कि तभी इंस्पेक्टर साहब ताड़ गए कि यह वही

लड़का है जिसकी उन्होंने सबसे पहले जांच की थी।

"यह क्या?" इंस्पेक्टरने उसे फटकारा, "मुझे धोखा देना चाहते हो? तुम तो सवाल कर चुके हो न?"

एक दबी-सी मुसकराहट चेहरेपर लाकर लड़केने कहा, "जी हां, लेकिन इस बार मैं एक दूसरे लड़केकी एवजमें आया हूं।"

"एक दूसरे लड़केकी एवजमें?" इंस्पेक्टर तैशमें आकर चिल्लाया, "मेरी जिन्दगीका यह सबसे शर्मनाक तजरबा है।"

अपराधकी स्वीकृतिमें लड़के ने अपना सिर नीचा कर लिया।

कक्षामें सन्नाटा छा गया। सब आतंकित होकर, इंस्पेक्टर आगे क्या कहेंगे इसकी, प्रतीक्षा करने लगे।

"किसकी एवजमें आए हो?" इंस्पेक्टरने गुस्सेसे लाल होकर पूछा।

"अपने सबसे प्यारे दोस्तकी एवजमें। वह फुटबॉलका मैच खेलने गया है।"

इंस्पेक्टर साहब अध्यापककी ओर मुड़े: "और मास्टर साहब, आपकी आंखोंके सामने ऐसी बात क्यों होती है? आप जानते थे कि सबसे पहले यह लड़का बोर्डपर एक सवाल कर चुका है।.... और बावजूद इसके यह मुझे धोखा देनेकी कोशिश कर रहा है, यह जानकर भी आप चुप बने रहे!"

अध्यापकने अपनी सफाई देते हुए कहा, "क्षमा कीजिए, श्रीमानजी, मैं इन लड़कोंको बिलकुल नहीं पहचानता।"

"अध्यापक अपनी कक्षाके विद्यार्थियोंको नहीं पहचानता!", वह अचंभेमें आकर बोला।

"मैं इस कक्षाको नहीं पढ़ाता ..."

"तब आप यहां आए क्यों हैं?"

"मैं इनके अध्यापककी एवजमें आया हूं। वह भी मैच खेलने गए हैं।"

एक क्षीण हंसी इंस्पेक्टरके चेहरेपर क्षण भरके लिए झलकी। कुछ कहनेकी गरजसे उसने अपना सिर उठाया, पर रुक गया।

फिर हाथ फटकारते हुए बोला, "अपनी खुशकिस्मतीकी खैर मनाइए। मुझे भी अपने साथी की एवजमें आना पड़ा है। वह भी मैचमें गए हैं। अगर वह आज यहां होते, तो इतनी आसानीसे आप नहीं बच पाते!"

—श्रीमती रेवाबास

शानी शान

www.kissekahani.com

आगकी चारों ओर बैठे जानवर पहरा देनेके साथ साथ समय काटनेके लिए कहानी-किस्से भी सुना रहे थे। इसी सिलसिलेमें कटक बंदर-ने कहानी शुरू की : "मेरे दादाजीने जंगलमें एक बहुत शानदार होटल खोला, बिल्कुल शहर जैसा। होटलमें जंगलके सभी छोटे-बड़े जानवर खाने-पीने आते थे—नन्ही छिपकली और मियां केंकड़ेसे लेकर उल्लू खरगोश व उसके बच्चे, श्री और श्रीमती चीता, मास्टर भालू, डाक्टर रीछू, गिलहरी व लोमड़ी वगैरा।

"कभी कभी इस होटलमें जंगलका राजा शेर भी आता था। जिस दिन शेर आता था, उस दिन मेरे दादा चम्पक और उनके होटलके सभी नौकर-चाकर कांप उठते थे।

"एक दिन हांफते-दौड़ते पोपट कछुएने आकर मेरे दादासे कहा कि शेर राजा आ रहे हैं, और यह कहकर पोपट तुरंत रसोई घरमें जा दुबका। चम्पक दादाने तुरंत मेजपोश बदलवा दिए, नए फूलदान लगवाए और बैरोंको सचेत कर दिया।

"थोड़ी दर बाद सचमुच हुंकारता-दहाड़ता शेर राजा आया। होटलके दरबान दीपू भालूने सलाम किया और दरवाजेका परदा हटाकर एक तरफ खड़ा हो गया।

"शेरने शानसे चलकर होटलमें प्रवेश किया। दादाने आगे बढ़कर सलाम किया और शेरके हाथसे छड़ी और टोप लेकर पास ही खूंटीपर टांग दिए। शेर राजा हाथ बांधकर खड़े बैरों-से सलाम लेता हुआ एक बड़ी टेबलपर जा बैठा और बैठते ही अपनी रोबदार आवाजमें बोला, 'टॉमेटो सूप!' फौरन हैडबेरे कीकू लोमड़ी ने दौड़कर पूसी रसोईदारिनसे कहा, 'शेर राजा के लिए टॉमेटो सूप!' और दौड़कर अपनी जगह जा खड़ा हुआ। उधर शेर राजाका नाम सुनते ही पूसीके हाथसे अंडोंकी प्लेट छूट गई।

"पोपट कछुआ नालीमें दुबका बैठा था। फूटे अंडोंको देखकर वहीं जीभसे होंठ चाटता रहा, पर अंडा लेने बाहर नहीं निकला।

"पूसीने तुरंत ताजा टमाटरोंका सूप बनाया, ट्रे साफ की। उस पर खूबसूरत कपड़ा बिछाकर प्याला ढककर रख दिया। पूसीके हाथ कांप रहे थे, अगर ठीक वक्तपर होंचू गधेने जो करीब ही

मनोहर वर्मा

कीचला फोड़ रहा था, हाथ नहीं लगाया होता, तो अंडोंकी तरह सूप भी जमीन पर फैल जाता।

"मोनू भालू सूप लेकर गया। कीकू लोमड़ीने मेजपोशकी सलवटें ठीक कीं और मोनूने बड़े सलीकेसे प्याला शेर राजाके सामने रख दिया, फिर नैपकिन दिया और मसालेकी शीशियोंको और करीब खिसकाकर एक ओर खड़ा हो गया।

"शेर राजाने सूप देखा, और लंबी सांस खींच कर सूंघते हुए कहा, 'सूप अच्छा बना लगता है!'

'जी हां, बहुत अच्छा बना है,' कीकूने भी सुड़ुक खींचकर नाकको नचाते हुए कहा।

"तभी शेर राजाने कीकूकी तरफ देखा, फिर मोनूकी तरफ। दोनों हाथ बांधकर सीधे खड़े हो गए। एक मिनिट, दो मिनिट, तीन मिनिट शेर राजा बैठे रहे, देखते रहे कीकू-मोनूकी तरफ। सूप लेना शुरू ही नहीं किया!

"हैडबैरा कीकू घबराया। हिम्मत करके दो कदम आगे बढ़कर बोला—'सर!' तभी शेर राजा गरज उठा—'हां, मैं पी नहीं सकता!'

'सर, क्या बहुत गर्म है?' कीकूने कांपते हुए पूछा।

'मुझे नहीं पता, पर मैं पी नहीं सकता!' शेरने जवाब दिया।

'काली मिर्च ज्यादा है क्या, सर? कभी कभी यह पूसी मिर्च अधिक डाल देती है।'

'मुझे नहीं पता, पर मैं कहता हूं कि मैं पी नहीं सकता!' शेर राजाने झुंझलाकर कहा।

'गर्म मसाला कम हो सकता है सर!' कीकू इतना ही बोल पाया था कि शेर गरज उठा: 'कह तो दिया मुझे नहीं पता! पर मैं पी...'

'तो...तो...फिर हम क्या सेवा...' कीकू अब कांप रहा था और मोनू दौड़कर अंदर रसोई में गया और पूसीसे कुछ पूछकर वापस लौटा। हाथ बांधकर खड़ा हो गया, फिर बोला, 'सर, अगर आप पसंद नहीं करते हैं, तो इसमें प्याज बिल्कुल नहीं है, सर!'

"इस बार शेर गुस्सेमें गुर्रा कर रह गया।

"चम्पक दादा और सभी बैरे वहां हाथ बांधकर खड़े हो गए। सब डरके मारे कांप रहे थे। पता नहीं किसकी गलतीके कारण शेर राजा सूप नहीं पी रहे।

'क्या इसमें नमक अधिक है, सर?' चम्पक दादाने बड़ी नम्रतासे पूछा।

'मैं नहीं जानता। मैं यह पी ही नहीं सकता!' शेरने कहा। तभी रसोईदारिन पूसीने आकर सलाम किया और बोली—'मैंने सुना है, हुजूर सूप नहीं पी रहे हैं...!'

'हां, नहीं पी सकता!' शेर पूसीकी बात पूरी होनेसे पहले ही झुंझला उठा। और इस बार जो वह दहाड़ा तो कीकूकी एक आंखका चश्मा लटक गया। पूसीके हाथसे तौलिया छूट गया। चम्पक दादाके मुंहसे चरट निकल पड़ा।

"होटलके एक कोनेमें बड़े मजेसे आमलेट खाते हुए पिंकू खरगोश उछल पड़ा और हाथमें आमलेट लेकर भाग खड़ा हुआ।

"पूसीने अपने आपको संभाला और साहस बटोरकर कहा—'सर, मैंने बहुत अच्छे ताजा टमाटरोंका सूप बनाया है, सब चीजें मैंने नापसे डाली हैं, गरम भी है, आप चाखिए तो...!"

'मैं नहीं पी सकता!' शेरने जवाब दिया। तभी चम्पक दादाने हैडबैराको आवाज दी—'कीकू, शेर राजाके सामनेसे सूप उठा लो! पूसी, सूप दूसरा बनाकर भेजो।'

"कीकू तुरंत आगे बढ़ा और ज्योंही सूपका प्याला उठानेको हाथ बढ़ाया, त्यों ही शेरने अपने दोनों हाथ टेबलपर मारते हुए जोरसे चीखकर कहा, 'सूप रहने दो। मैं लेना चाहता हूं, पर चम्मच कहां है?'

'ओह चम्मच...चम्मच...चम्मच...' करते हुए सब लोग इधर-उधर दौड़ पड़े और जिसे जहांसे चम्मच मिला शेर राजाके सामने ला रखा! और फिर हाथ बांधकर खड़े हो गए।"

पहरा देते हुए सभी साथी ठहाका मारकर हंस पड़े! ●

मोना
की
नई गुड़िया
१६"

शीला डौल

मोना टॉयज
इण्डस्ट्रीज,

डी-३४, राजोरी गार्डन,
दिल्ली–१५
फोन : ५६६८३६

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स : **गुप्ता सेल्स कारपोरेशन,** २७९/१४, पोस्ट आफिस स्ट्रीट, सदरबाजार, दिल्ली

महापुरुषों के हास्य-विनोद

सन १९३० की एक घटना है। गांधीजी रेलगाड़ी द्वारा बम्बईसे दिल्ली जा रहे थे। फरीदाबाद स्थित गुरुकुल इंद्रप्रस्थके छात्रोंको मालूम हुआ, तो उन्होंने बापूका दर्शन कर उनसे अपनी हस्तलिखित पत्रिकाके लिए संदेश लेनेका निश्चय किया।

छात्र सुबह सुबह स्टेशनपर जमा हो गए। घंटे भरकी प्रतीक्षाके बाद झक-झक करती हुई गाड़ी जब प्लेटफार्मपर आई, तो सारा वातावरण गांधीजीके जयजयकारसे गूंज उठा। भारी भीड़ थी। छात्र बेचारे किसी तरह भीड़को चीरते हुए उनके पास पहुंचे। कुछ बातचीतके बाद छात्रोंने बापूसे संदेशके लिए प्रार्थना की। बापूने हंसते हुए कहा, "मेरा यह नियम है कि मैं हरिजन कल्याण-कोषके लिए बिना पांच रुपये लिये हस्ताक्षर या संदेश नहीं देता। रुपये पेशगी चाहिएं।"

छात्रोंके पास पांच रुपये न थे। उन्होंने सबके पाससे जुटाकर पांच रुपये राष्ट्रपिताको दिए। रुपये मिलते ही गांधीजीने पांच वाक्योंका एक छोटा-सा संदेश और हस्ताक्षर उन्हें दे दिए।

समय हो गया था। गाड़ीने सीटी दी और धीरे-धीरे खिसकने लगी। एक छात्रने उत्सकतावश पूछा: "बापू, आप इन रुपयोंका क्या करेंगे?"

गांधीजीने हंसते हुए कहा, "केले खाऊंगा!" यह सुनते ही लोग हंसते हंसते लोट-पोट हो गए।

•

सन १९६० की एक घटना है। पंडित नेहरू का जन्मदिन था। तड़के ही नन्हे-मुन्ने और बड़े लोग उनके घरपर इकट्ठे हो गए थे।

आधे घंटे बाद नेहरूजी बाहर निकले। पहले वह छोटे बच्चोंसे मिलने और उनसे फूलोंका उपहार लेने-देनेमें लग गए।

बच्चोंकी भीड़से अलग एक पांच वर्षीय बालक खड़ा था। पंडितजीकी निगाह उसकी ओर गई और दूसरे ही क्षण वह उनके पास पहुंच गए। उन्होंने पीठ थपथपाते हुए उसका नाम पूछा।

लड़केने अपने हाथका फूल उन्हें दे दिया और टकटकी लगाकर उन्हें देखने लगा।

नेहरूजीने दूसरी बार पुचकारते हुए कहा, "बोलो न, तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़केने बड़े सकुचाते हुए कहा, "जी . . . जी मेरा नाम मोतीलाल है!"

पंडितजीने हंसते हुए उसे गोदमें उठाकर कहा: "तब तो तुम मेरे पिता हुए!"

लोगोंकी हंसीका ठिकाना न था।

•

सन १९४८ की एक घटना है। सरदार वल्लभ भाई पटेलसे कुछ विदेशी पत्रकार बातचीत कर रहे थे। उनमेंसे एक 'न्यूयार्क टाइम्स' का संवाददाता था। उसने पूछा, "आपकी इस समय ठीक ठीक उम्र क्या होगी?"

सरदार पटेलने कहा, "यह तो मेरे पिताजी ही बतला सकते हैं। क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं?"

संवाददाताने कहा, "अगर आप मिला दें, तो मैं बहुत आभारी होऊंगा।"

सरदार पटेलने अपनी अंगुली आसमानकी ओर उठाते हुए कहा, "सीधा रास्ता है, आप वहीं चले जाइए!" वह बेचारा देखता ही रह गया।

•

एक बार महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपने एक मित्रके यहां गए। मित्र महाकविको अपने घरकी सबसे बढ़िया कुर्सीपर बैठाकर, उनके सत्कारमें लग गए। दो-तीन मिनिट बाद महाकविने पूछा, "कुर्सी सजीव तो नहीं है?"

यह सुनकर उनके मित्र और दूसरे लोग अचंभेमें पड़ गए। किसीकी कुछ समझमें न आया कि क्या जवाब दें। सब लोग एक-दूसरेका मुंह देख रहे थे।

महाकवि अपने मित्रोंकी यह दयनीय दशा देखकर सब कुछ समझ गए। उन्होंने कहा, "अरे भाई! कुर्सी सजीव तो नहीं है यानी कि इसमें खटमल तो नहीं हैं!"

कविकी बात सुनते ही सब लोग खिलखिला कर हंस पड़े।

—हरिश्चंद्र सिंह

अभी बाबा पुरानी आराम-कुर्सीपर अच्छी तरह बैठकर अपने गंदे बदबूदार मोजे निकाल भी नहीं पाए थे कि उन नौ बच्चोंने उन्हें घेर लिया : "आज बताना ही पड़ेगा, बाबाजी. . .आज बताना ही पड़ेगा . . .आखिर कहां गई हमारी दादी?"

बच्चोंके तेवर देखकर बाबा चौंके । वह अपने सामनेवाले बच्चेके चेहरेको देखते हुए धीरे धीरे गर्दन मोड़कर वहां तक ले गए, जहां तक गर्दन जा सकती थी—चुन्नू, मन्नू, राका, गनी . . .फिर सामनेसे बायीं ओर गर्दनको ठीक उसी तरह मोड़ते हुए अपने सिर तक ले गए—झासू, चांदनी, मौलू, पपी; और सिरपर होगा वह बदमाश लाल, जिसकी उम्र सबसे बड़ी है और जो सारे बच्चोंको इशारों इशारोंमें जो समझाता है, वही सब करते हैं । बाबाके होठोंपर संतोष-की मुस्कराहट आ गई । उनके तीन बेटोंके यह नौ बच्चे एक हारकी तरह उनकी गर्दनके गिर्द पड़े हुए हैं । 'मेरे नौलखे हार!' उन्होंने सोचा और मुस्कराहट सारे चेहरेपर बिखर गई ।

"और अगर आज भी नहीं बताया, तो?"

"तो मैं आपकी मूंछें. . ." राकाने आगे बढ़कर बाबाकी सफेद दूधकी तरह सफेद मूंछों को अपनी छोटी-सी मुट्ठीमें पकड़ लिया ।

"हां . . .हां. . ." बाबा राकाकी मजबूत पकड़से अपनी मूंछें छुड़ाते हुए बोले, "अच्छा, बताओ मेरी मूंछें नोंचकर क्या करोगे?"

"अपने डैडीको लगा देंगे, और क्या करेंगे!"

"तब लोग हंसेंगे तुम्हारे डेडी पर । जानते हो सिरके बालोंकी तुलनामें मूंछोंकी उम्र पंद्रह वर्ष कम होती है । तुम्हारे डैडीके बाल तो काले हैं, जिनकी उम्र पंद्रह साल बड़ी है और मूंछें, जिनकी उम्र पंद्रह साल कम होगी, वे सफेद । लोग कहेंगे—राकाके डेडीने शायद चुराकर दही खाया है!"

इसपर जोरदार कहकहा पड़ा और करीब था कि आज भी मामला यों ही चला जाता कि उनके सिरपर खड़े बड़े लड़केने इशारा किया और बच्चे चीखने लगे : "नहीं. . .नहीं आज बताना पड़ेगा . . .आज नहीं छोड़ेंगे, बताना पड़ेगा . . ."

हास्य कहानी

मूंछोंका

www.kissekahani.com

चमत्कार

— ग़यास अहमद गद्दी

"अच्छा भाई बताता हूं, बताता हूं," बाबाने तंग आकर कहा और आंखें बंद कर लीं। "तुम्हारी दादी बहुत मोटी थीं . . ."

"मोटी थीं!" बच्चोंने बात पकड़ ली : "कितनी मोटी थीं?"

"बस समझो कि बहुत मोटी थीं मानो बगलू ग्वालेकी भूरी भैंस!"

इस पर जोरदार कहकहा लगा : "बाप रे बाप! इतनी मोटी. . .!"

"फिर चलती-फिरती कैसे थीं?" चांदनी-ने पूछा।

"बहुत मुश्किलसे यानी कमरेसे आंगन तक पहुंचनेमें समझो, सुबहसे दोपहर हो जाती थी!"

सब बच्चे फिर खिलखिलाकर हंसने लगे—"बाबा झूठ बोलते हैं ... बाबा झूठ बोलते है..." सारे बच्चे तालियां बजाने लगे।

"झूठ कहां बोलते हैं," बाबा गुस्सेमें आ गए, "मैं सब सच कह रहा हूं। तुम लोगोंको यकीन आए, तो सुनो, वरना मैं बंद करता हूं. . ."

"नहीं. . .नहीं. . .हम कुछ नहीं बोलते," सारे बच्चोंने एक साथ कहा।

"तुम्हें पता है, तुम्हारी दादी पारसी जात-की थीं और पारसियोंमें लोगोंके नाम कैसे अजीब-अजीब होते हैं जैसे सैराबजी रुस्तमजी पाइन-वाला, लीलाभाई गीताभाई बाटलीवाला। तुम्हारी दादीके मोटापे को देखकर लोगोंने उनका अजीब नाम रखा था—ऊंचाभाई नीचाभाई चौरसवाला!"

"ऊंचाभाई नीचाभाई चौरसवाला. . .?" बच्चोंने अचरजसे पूछा, "क्या मतलब हुआ इसका, बाबा?"

"वास्तवमें तुम्हारी दादी इतनी मोटी थीं कि उनके शरीरकी लंबाई और चौड़ाईका पता ही नहीं चलता था, इसलिए लोगोंने उनका नाम ऊंचाभाई नीचाभाई चौरसवाला रख दिया।"

इस पर सब हंस पड़े और फिर एक साथ बोले, "फिर?"

"फिर यह कि तुम्हारी दादी मुटापेसे तंग थीं। लोग, महल्लेमें और उस दफ्तरमें जहां वह काम करती थीं, खूब मजाक उड़ाते थे और तरह-तरहसे सताते थे . . .तुम्हारी दादीने खूराक कम कर दी, कसरतकी, कई दवाइयां खाईं, पर मोटापेमें कोई अंतर न पड़ा। आखिर उन्हें पता चला कि शहरमें एक बूढ़े अनभवी हकीम रहते हैं। उन्होंने मुटापा दूर करनेकी अचूक दवा बनाई है। तुम्हारी दादीको हकीम साहबने पांच गोलियां दीं कि उन्हें पंद्रह पंद्रह दिनके बाद लेना। तुम्हारी दादीने एक गोली वहीं खा ली और सीधे दफ्तर चली गईं। शामको जब वह अपनी कुर्सी से उठीं, तो उन्होंने अपने शरीरको हलका महसूस किया। पहले तो उन्होंने इसे वहम समझा, लेकिन घर आते हुए जो उन्होंने आस्तीनमें उंगलियां डालीं, तो वह ढीली थीं।

"फिर तो वह बहुत खुश हुईं और खुशीके मारे उन्होंने घर आते ही पहला काम यह किया कि एक गोली और खा ली।

"मैंने पूछा—'क्यों भई आज इतनी खुश क्यों हो?'

बोलीं—'नहीं बताऊंगी। सुबह आप देख लेना क्या होने वाला है!'

'क्या होने वाला है?' मैंने आश्चर्यसे पूछा किंतु उन्होंने कुछ नहीं बताया। रातका खाना खाकर हम सो गए। सुबह जब आंख खुली, तो मुझे खूब गुस्सा आया। मेरे पासके पलंगपर श्रीमती ऊंचाभाई नीचाभाई चौरसवालाकी जगह कोई और महिला सो रही थीं। मैंने चीखकर पुकारा, तो वह हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई और मुझे हैरानीसे देखने लगीं कि कहीं मैं पागल तो नहीं हो गया। इतनी देरमें मैंने जो गौर किया, तो यह तुम्हारी दादी ही थीं किंतु रातकी अपेक्षा एक चौथाई कम थीं।

"मैंने हैरानी और खुशीसे कहा—'यह क्या तमाशा है, चौरसवाला?'

'अब मुझे कोई चौरसवाला नहीं कह सकता?'

'मगर कैसे? यह रातोंरात क्या हो गया?'

'जादू नहीं, दवाका असर है!'

'नहीं, हो न हो यह जादू ही है!"

दुबली-पतली परेशानियां—

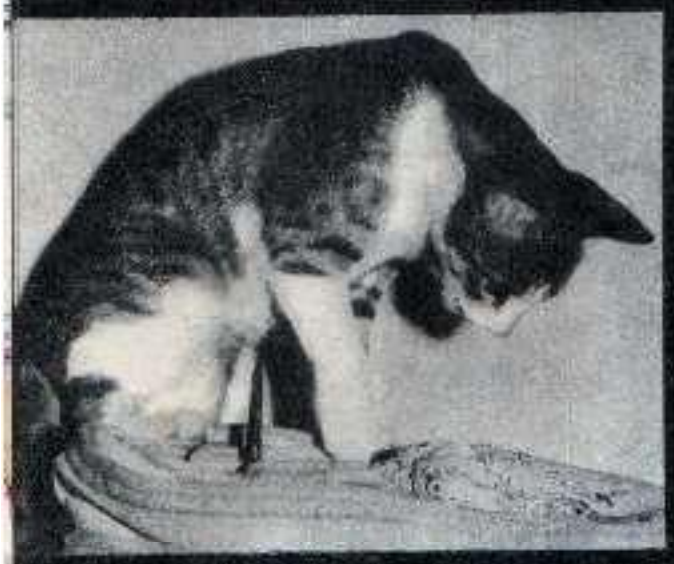

छिपता कहां है? मैं तुझे गरदनसे पकड़कर निकाल लूंगी!

आज तो मिनिटोंमें ही काबूमें आ गया—अब पेट भरेगा!

"आज हम बहुत खुश थे। जल्दीसे नाश्ता करके हम अपने अपने दफ्तरोंको चल दिए। उनके दफ्तरके गेट पर बैठे हुए पठानने उन्हें रोका—'खू! तुम्हें अंदर किदर जाना ए?'

"तुम्हारी दादीने उसे परिचय-पत्र दिखाकर यकीन दिलाया और दवाके जादू-भरे असर पर भाषण दिया, तब कहीं पठानने अंदर जाने दिया।

"उन्हें देखकर दफ्तरके सारे लोग हैरान रह गए और चौरसवालाने बारी बारीसे सभी को भाषण सुनाया।

"उन्होंने कुर्सीपर बैठकर संतोषका सांस लिया। सोचा कि क्यों न दफ्तरवालोंको बेवकूफ बनाया जाए। बस बटुएसे एक गोली निकालकर पानीके साथ और निगल ली।

"पैंतालिस दिनोंमें जो गोलियां उनको खानी थीं, वे उन्होंने पैंतालिस घंटोंमें खा लीं। खुशीसे वह पागल हो रही थीं।

"रातको हम दोनों खुश खुश सोए। उन्होंने जल्दी दुबले होनेके विचारसे एक गोली और खा ली।

"रातको जब मेरी आंख खुली, तो वह अपने बिस्तरपर नहीं थीं। मैं उन्हें पुकारने लगा। दो-तीन आवाजोंके बाद जवाब मिला, किंतु जवाब बिस्तरसे पांच फुटकी ऊंचाईसे आया। मैंने गर्दन उठाकर देखा, तो पांच फुट ऊपर हवामें लटक रही है और मिन्नत कर रही हैं कि मुझे यहांसे उतारो।

"मैंने पलंगपर खड़े होकर दबाया, तो मेरा वजन पड़ते ही वह बिस्तर पर आ गईं। अब तो खुशीकी बजाय वह रोने लगीं। मैंने अपना वजन हटाया, तो वह फिर छतकी ओर लपकीं। मैंने फिर उन्हें पकड़कर पलंगपर बिठाया। तब उन्होंने रो रोकर बताया कि साठ दिनोंमें खाने वाली दवा वह तीन दिनमें खा गईं। मैंने उन पर एक मोटी-सी किताब रख दी और भागा भागा हकीमके पास गया, मगर वह पंद्रह रोजके लिए बाहर गए हुए थे।

"तुम्हारी दादीको मैंने तसल्ली दी कि पंद्रह दिनके बाद हकीम आ जाएंगे और तुम ठीक हो जाओगी। मैं छुट्टी लेकर उनकी देखभाल करने लगा।

"एक रात बहुत गर्मी पड़ रही थी। हम छत पर सोने चले गए। मैंने तुम्हारी दादीके पैरोंसे लोहेके जूते उतारे और उनके सीनेपर एक मोटी-सी किताब रख दी!... सुबहको जब मेरी आंख खुली, तो किताब पड़ी थी..."

"और दादी?" हैरतसे बाबाकी ओर ताकते बच्चोंका सवाल था।

"दादी नहीं थी!... रातके वक्त शायद नींदमें उन्होंने करवट ली और किताब उनके सीने से लुढ़क गई..."

"और दादी?" बच्चोंने आश्चर्यसे फिर प्रश्न दोहराया।

"दादी नहीं थीं..." बाबाने रोनी सूरत बनाई और जेबसे एक छोटी-सी डिबिया निकाली, उसका ढक्कन खोला और एक काली-सी गोली हथेलीपर डाली—"और यह रही वह पांचवीं 'गोली'..." यह कहकर उन्होंने गोलीको गिलास-भर पानीसे निगल लिया।

फिर बच्चे तालियां बजाने लगे और शोर मचाने लगे—"बाबा अफीम खाते हैं... बाबा अफीम खाते हैं!"

(उर्दू से अनुवाद : सुरजीत)

—मेहताब किरण

हाय री तकदीर! क्या पता था कि आजकल चूहे भी नकली होने लगे हैं!

www.kissekahani.com

अबे, कह देंगे हम उनकी मामी और काकी हैं, आज ही गांव से आई हैं!
वाह! क्या तरकीब निकाली है!
थोड़ी देर बाद...
अरे, भई छोटू-लंबू!
छोटू-लंबू बाहर गए हैं, शाम तक लौटेंगे! हम उनकी मामी और काकी आज ही गांव से आई हैं!
अरे छोटू, ये तो सच-मुच चले गए!
अरे, तो क्या समझते हो छोटू की तरकीब को!
लेकिन फौरन ही...
अरे कहां हो मामी, काकी? हम मुहल्ले वालियां तुम से होली खेलने आई हैं!
अरे बाप रे, मर गए
हाय राम! ये तो छोटू-लंबू हैं! इनकी जितनी दुर्गति की जाए थोड़ी है!
हा, हा, हा!
शेखर

खेल-कूद

फुटबाल की कहानी

—हरिमोहन—

(परागके पिछले अंकमें तुमने फुटबाल खेलने के नियमोंकी जानकारी प्राप्तकी थी। लो, अब उसके खेलनेके तरीकेके बारेमें पढ़ो)

(3)

अगर तुम फुटबालके सफल खिलाड़ी बनना चाहते हो, तो एक गुरुमंत्र याद रखो। फुटबालमें उसी टीमकी जीत होती है, जिसके खिलाड़ी अपने साथियोंको तेजीसे पास देते हैं, और मौका मिलते ही ठीक निशानेपर जोरदार शॉट लगाते हैं।

फुटबालमें वही टीम जीतती है, जिसके सब खिलाड़ी एक साथ मिलकर पहलेसे तय की गई योजनाके अनुसार खेलते हैं।

फुटबाल खेलनेके लिए नियम तो सब जगह एकसे ही हैं, पर ही तरीके अवश्य भिन्न भिन्न हैं। एक काफी प्रचलित तरीका है—'थर्ड बैक' तरीका, जिसमें 'सेंटर हाफ', विपक्षी सेंटर फारवर्ड और फारवर्ड खिलाड़ियोंके मुकाबलेके लिए अपने स्थानसे ही चिपका रहता है। हमलेके लिए ये खिलाड़ी इनसाइड फारवर्ड खिलाड़ियोंको छोटे और लम्बे पास देते हैं। विंग हाव्ज दूसरी टीमके इनसाइड खिलाड़ियोंके साथ रहते हैं। हां, 'थ्रो-इन' के वक्त वे साथ साथ नहीं रहते। इस योजनामें इनसाइड फारवर्ड दूसरे फारवर्ड खिलाड़ियोंके साथ रहते हैं अर्थात वे सब खिलाड़ी अंग्रेजीके डब्ल्यू अक्षरकी भांति फैल जाते हैं।

फुटबाल संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : अच्छा गोलकीपर बननेके लिए किन गुणोंकी आवश्यकता होती है?

जवाब : उसे गेंदको पकड़ने, और उसे अचूक तरीकेसे बहुत दूरी तक किक और थ्रो करनेकी कलामें निपुण होना चाहिए। क्रिकेटका कुशल फील्डर या क्रिकेट कीपर अच्छा गोलकीपर बन सकता है। अच्छे गोलकीपरको नट जैसा फुर्तीला और दक्ष होना चाहिए। सबसे बड़ा गुण है विश्वसनीयता और गेंदको लोकनेमें अचूकता।

सवाल : इनसाइड फारवर्ड बननेके लिए किन किन गुणोंको विकसित करना चाहिए?

जवाब : इनसाइड फारवर्ड खिलाड़ी हमेशा अनुभवी और योग्य खिलाड़ी ही रहता है जो ड्रिबिलिंग की कलामें उस्ताद होनेके अलावा जोरदार शूटिंग करके सही पास भी दे सकता हो। उसे काफी भागना और गेंदपर काफी देर तक नियंत्रण भी रखना पड़ता है, इसलिए उसका शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है।

सवाल : कार्नर किक कितने प्रकारके होते हैं?

जवाब : दो तरह के। इन-स्विंगर और आउट-स्विंगर। इनमेंसे किसका प्रयोग करना चाहिए—यह हवाके रुख, गोलकीपरकी ऊंचाई और गेंदको रोकनेकी उसकी क्षमता तथा फारवर्ड खिलाड़ियोंकी शूट करनेकी क्षमतापर निर्भर करता है।

सवाल : 'हैडिंग दि बॉल' क्या होता है?

जवाब : गेंदको अचूकतासे काफी दूर तक अपने सिरसे ऊपर उछालते हुए इच्छित स्थान पर ले आना। पहले इसका प्रयोग कम होता था, पर आजकल काफी गोल इसी ढंगसे किए जाते हैं। इसमें गेंद खोपड़ी पर नहीं, बल्कि माथेके ऊपरी भागपर ली जाती है, क्योंकि वहांसे वह आसानीसे दिखाई भी देती है, और वह भाग खोपड़ीसे ज्यादा सुरक्षित और मजबूत भी होता है।

सवाल : गेंदके गलत ढंगसे थ्रो-इन करनेकी सजा क्या है?

जवाब : विपक्षी दलका कोई खिलाड़ी थ्रो-इन करेगा।

फारवर्ड खिलाड़ियोंकी दो लाइनें रहती हैं। एकमें सेंटर फारवर्ड और दो आउट साइड्स रहते हैं, और दूसरीमें दो इनसाइड फारवर्ड्स।

बचावके खेलमें, एक तरीकेके अनुसार, टीमके खिलाड़ी अंग्रेजीके 'एम' अक्षरके रूपमें फैल जाते हैं। इस खेलमें सेंटर फारवर्ड पीछे रहता है, और इनसाइड खिलाड़ी उसके पीछे।

भारतके प्रसिद्ध फुटबाल कोच स्व. रहीमने भारतीय फुटबाल खिलाड़ियोंके लिए एक नई शैलीका आविष्कार किया था, जो काफी कारगर साबित हुई। इस शैलीके खेलमें सेंटर फारवर्ड हाफ लाइनमें खेलता है, और आगे नहीं जाता। गोल करनेकी जिम्मेवारी चार खिलाड़ियोंकी होती है। यह शैली 'बचाव करते हुए हमला करने की शैली' मानी जाती है, और इसे अपनाने वाली टीम जीतनेकी कोशिश करनेके स्थानपर हारसे बचनेपर अधिक जोर देती है। स्व. रहीमका कहना था कि दूसरे देश आजकल फुटबालमें भारतसे इतना आगे निकल चुके हैं कि भारत उनका सामना इसी शैलीका खेल खेलकर ही कर सकता है। जकार्ता में भारतीय टीमने इसी शैलीसे विजय पाई।

साधारण किक के समय बायें पांव की स्थिति

स्ट्रिक किक में पांवों की स्थिति

पुश किक में पांवों की स्थिति

फुटबालका अच्छा खिलाड़ी बननेके लिए तुम्हें पहले सही और जोरदार ढंगसे गेंदको किक करना सीखना होगा। इसके लिए तुम्हें स्थिर गेंदके पास इस ढंगसे आना होगा कि बायां पांव गेंदके साथ रहे, और सिर झुका हुआ और गेंदके ठीक ऊपर। फिर दायें पांवसे एक ओरसे हल्केसे हिलकर गेंदको सही दिशामें जमीनसे उठाकर इच्छित दिशामें फेंक दें। यदि बांयां पांव एक ओर बहुत पीछे रहा, तो गेंद बहुत ऊपर जाएगी।

छोटे पासोंके लिए, जैसे विन्ग हाव्जसे फारवर्ड खिलाड़ियोंको, पुशकिकका सहारा लिया जाता है। इसमें शरीरको सीधे गेंदसे तिरछा रखकर पांवके किसी भी भागसे किक लगाया जाता है। पर इस किकमें जल्दी नहीं की जाए, तो विपक्षी उसे बीचमें ही रोक सकते हैं।

'बौली' किकका एक कठिन रूप है। इसके लिए भी लंबे अभ्यासकी जरूरत है। इसमें ऊपर से आती हुई गेंदपर, उसके जमीनपर गिरनेसे-पहले बराबर निगाह रखनी पड़ती है, और गेंदको जमीनपर गिरनेसे पहले ही जोरदार किक लगाकर उसे इच्छित दिशामें भेजना पड़ता है। 'हाफ बौली' अपेक्षाकृत आसान है। यह क्रिकेटकी हाफ बौलीसे काफी मिलती है, और इसमें सिरको गेंदके ठीक ऊपर रखकर और शरीरको थोड़ा आगे झुका कर किक लगाया जाता है।

ऊंचाईसे आती हुई गेंदको जमीनपर ले आनेकी कलाको 'ट्रेपिंग' कहते हैं 'ट्रेपिंग' गेंद की ऊंचाईके अनुसार पांव, जांघ, सीने या माथेसे की जा सकती है। गेंदको अपने ही पास रख कर उसे मनचाहा नाच नचानेकी कला 'ड्रिब्लिंग' कहलाती है। विपक्षी खिलाड़ीसे कुशलतापूर्वक गेंद हथियानेकी कला 'टैकलिंग' कहलाती है। टैकलिंग आगे, पीछे, सामने या बाजूसे होता है।

ये सब सुझाव तुम्हारी मददके लिए हैं, पर याद रखो कि बिना अभ्यासके कोई अच्छा खिलाड़ी नहीं बन सकता। (क्रमशः)

(१६)

श्री रोशनाईराम 'रोशन' अपने अध्ययन-कक्षकी खिड़कीमें छातीपर हाथ बांधे खड़े थे और दूर आसमानकी ओर निगाहें टिकाए हुए थे। उनकी दोनों भौंहें गहरे विचारके कारण एक-दूसरेके साथ मिलकर नाकके सिरपर पहुंच गई थीं और उनके लंबे बाल पीठपर झूल गए थे।

आखिरकार 'रोशन' साहब झटकेसे जागे, मानो अभी अभी उनकी नींद खुली हो और पीछे-की ओर मुड़े।

"नमस्कार, बंधुओ," उन्होंने बड़ी विनम्र और धीमी वाणीमें कहा। "क्षमा कीजिए, मैं कल्पनाकी ऊंची उड़ान उड़ रहा था। मेरा नाम 'रोशन'..." और उन्होंने हाथ मिलानेके लिए बढ़ाया।

सबसे दुआ-सलामके बाद नलकू भाईके आविष्कारोंकी चर्चा चल पड़ी। श्री रोशनाई राम 'रोशन' ने उन लोगोंको अपना चटर-पटरका बक्सा दिखाया, जो उनके लिए नलकू भाईने तैयार किया था। खरखरे भाईने पूछा, "यह क्या चीज है?"

"यही तो है चटर-पटर," श्री रोशनने कहा। "यह देखो, इसके एक तरफ इस छेदसे जो कुछ भी बोलोगे, वही दूसरे छेदसे जब चाहो, तब

धारावाही उपन्यास

www.kissekahani.com

मोडूमल के कारनामे

चन्द्रकिशोर जायसवाल

इससे उनकी मुद्रा किसी साधूकी भांति ध्यानमें डूबी लगती थी। जब हमारे तीनों मित्र उनके कमरेमें पहुंचे, तो वह हिले तक नहीं। खरखरे भाईने बड़े ऊंचे स्वरमें उनका अभिवादन किया और मोडूमल व मेठूमलका परिचय उनसे कराया और यह बताया कि वे टांकी लेनेके लिए वहां आए थे। लेकिन श्री रोशनाईराम 'रोशन' इस तरह बिना हिलेडुले सामने नजरें टिकाए खड़े थे, मानो कोई खयाल उनके दिमागमें कूद-फांदकर निकल भागना चाहता है और वह उसकी पूंछ पकड़कर रोकनेकी कोशिश कर रहे हैं। खरखरे भाईने कंधे मटकाकर मोडूमल और मेठूमलकी ओर इस भावसे देखा—"कहा न था मैंने!"

सुनाई देगा। बोलो, बोलो इसमें कुछ।"

खरखरे भाई आश्चर्यसे बक्सेको देखते रहे। मोडूमलने उसमें बोला: "मोडूमल, मोडूमल, मेठूमल, मेठूमल—"

"खरखरे, खरखरे," खरखरे भाईने झटसे बोला।

अब श्री रोशनाईराम 'रोशन'ने बक्सेका एक बटन दबाया। तुरंत दूसरी ओरसे आवाज निकली: "मोडूमल, मोडूमल, मेठूमल, मेठूमल—खरखरे, खरखरे!"

"यह तो बात करनेकी मशीन है, इसका आप क्या करते हैं?" खरखरे भाईने पूछा।

"क्यों? इसके बिना लेखक लोग कर ही क्या सकते हैं? अरे, मैं इसे लोगोंके घरोंमें रख देता

(परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ बौने रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो जातियोंके थे—बौने लड़के और बौनी लड़कियां। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल। इन्हीं बुद्धूमलके कुछ कारनामे तुम पढ़ चुके हो।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया। नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचाने वाली थीं बौनी लड़कियां। बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हैं, तो वह कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां जा पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें नंबरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे। सबसे पहले छुट्टी मिली तानप्रकाश बांसुरीवादक और कूंचीराम चित्रकारको, इसके बाद छोड़े गए मेठूमल और मोड़ूमल टिनसाज।

चारोंने बाहर आकर क्या किया—यह तुम पिछले अंकोंमें पढ़ चुके हो। अब मेठूमल और मोड़ूमलकी लेखक रोशनाईराम 'रोशन' से दिलचस्प मुलाकातका हाल पढ़ो।)

हूं। जो बातचीत वे करते हैं, सब इसमें भर जाती है। मैं क्या करता हूं कि बस उन सब शब्दोंको बटोरकर कागजपर उतार देता हूं—और लो, हो गई कहानी तैयार—या फिर उपन्यास भी चुटकियोंमें बन जाता है।"

"कितनी आसान बात है!" मेठूमलने कहा। "कुछ लोग कहते हैं कि लेखकोंको पहले कथानक सोचना पड़ता है!"

"बेहूदगी है!" रोशनाईराम 'रोशन'ने रोशनी डालते हुए कहा, "यह सब किताबी बातें हैं। तुम कथानक सोचना शुरू करो, और बादमें लगेगा कि यह तो पहले ही किसीने सोच लिया है। हमारे भेजेमें कोई बात आनेसे पहले ही वह दूसरोंके भेजेमें आ चुकती है। आजकलका तरीका यह है कि अपनी सामग्री सीधे प्रकृतिसे लो—एकदम कच्चा माल! कौन जानता है इसीसे कोई ऐसी चीज हाथ लग जाए कि किसी लेखकके भेजेमें पहले कभी आई ही न हो।"

"लेकिन हर आदमी अपने घरमें आपको यह बक्सा थोड़े ही रखने देगा?" मोड़ूमलने कहा।

"मैं उनका उल्लू बनाता हूं," रोशनाईराम 'रोशन'ने कहा, "देखो न, यह लगता तो छोटा-मोटा थैला-सा ही है। बस, मैं अपने मित्रोंके यहां इसे लेकर जाता हूं और 'गलतीसे' इसे किसी कुरसी या मेजके नीचे रखा भूल आता हूं। बादमें, जो कुछ मेरे मित्र कहते-सुनते हैं, सब मुझे मालूम हो जाता है।"

"और वे क्या कहते-सुनते हैं?" मेठूमलने पूछा। "वह तो बड़ा मजेदार होता होगा?"

"हां, होता तो है ही। मैं भी नहीं जानता था कि ये बातें इतनी मजेदार होती होंगी। असलमें, मालूम यह हुआ कि वे कुछ भी नहीं कहते-सुनते। बस, ठहाके लगाते हैं, बिना बात चिल्लाते हैं, मुर्गेकी बोली बोलते हैं, कुत्तोंकी तरह भौंकते हैं, गर्र गर्र और म्याऊं म्याऊं करते हैं, लेकिन बोलनेको एक भी शब्द नहीं।"

"यह तो बड़ी अजीब बात है!" मोड़ूमलने कहा।

"है न?" रोशन साहब बोले, "जब तक मैं उनके साथ रहता हूं, वे आम बौनोंकी तरह बातें करते हैं, लेकिन जैसे ही मैं वहांसे चला कि उन्होंने इस तरहकी विचित्र आवाजें निकालनी शुरू कर दीं। पिछली रात जो भरा गया वह सुनो।"

और इसके बाद जो 'ही-ही हा-हा' उस बक्सेमें से निकला, तो तीनों मेहमानोंके कान पक गए। लेकिन इस 'ही-ही हा-हा'से पहले एक वाक्य था, जिसकी ओर उन्होंने खास ध्यान दिया—"मेज के नीचे देखो।"

कंधे मटकाकर श्री रोशनाईराम बोले, 'सुना?"

"इससे तो कोई उपन्यास निकलना मुश्किल ही है," मोड़ूमलने कहा।

"इसमें कोई भेद नहीं," खरखरे भाई बोले,

"अब तक शहरमें हर कोई जान गया है कि आपके पास बातचीत भरनेकी मशीन है। आप उनको उल्लू बनाना चाहते हैं। पर उल्टे वे आपको गधा बना रहे हैं।"

यह बात रोशनाईराम 'रोशन'को अच्छी नहीं लगी और उनकी भौंहें तन गईं। उन्होंने कसम खाई कि वह उनका उल्लू बना कर रहेंगे और इस बक्सेको उनकी खिड़कियोंके नीचे रखा करेंगे। फिर उन्होंने एक छतरी जैसी चीज निकाली। खोलनेपर मालूम हुआ कि वह एक जुड़ी हुई मेज-कुरसी है, जो वनमें लेजाकर जंगलों और पहाड़ोंके बारेमें लिखनेके काम आती है। उन्होंने मोड़ूमलको उस कुरसीपर बैठनेके लिए कहा।

मोड़ूमल उस कुरसीमें इस तरह फंसे कि निकलते न बने। श्री रोशनाईरामने कहा, "और जब इस कुरसीपर आरामसे बैठ जाते हैं, तो दिमागमें नए नए विचार आने शुरू हो जाते हैं—प्रेरणा उभरने लगती है।"

मोड़ूमलके घुटनोंमें मुड़े मुड़े दर्द होने लगा था—प्रेरणाका तो कहीं दूर दूर तक पता न था। सो किसी तरह कुरसीसे निकलकर उसने बातचीतका रुख बदला और बोला, "आपने अब तक कौन कौनसी किताबें लिखी हैं?"

"अभी तक एक भी नहीं लिखी," श्री रोशनाईरामने कहा। "लेखक बनना इतना आसान नहीं है, जितना आप समझते हैं। जब मैंने लेखक बननेका इरादा किया, तो पहले बहुतसी ऐसी चीजें मुझे बटोरनी पड़ीं, जिन्हें हासिल करना बहुत मुश्किल था। पहले तो इस मेज-कुरसीके लिए ही सालों इंतजार करना पड़ा। फिर इस चटर-पटरमें बरसों लग गए। आजकल कारीगरोंके दिमाग चढ़े हुए हैं—खास तौरसे नलकू भाईके। ढाई साल तो उसे यही सोचनेमें लग गए कि चटर-पटर बनाई किस तरह जाए। फिर, बिना इस बातका खयाल किए कि मेरे रचनात्मक विचार किस तरह कागजपर उतरे बिना छटपटा रहे हैं, उसने इसके साथ कूड़ा बटोरनेका यंत्र—'वैक्यूम क्लीनर'—भी लगानेकी ठान ली और उसे लगाकर ही छोड़ा। भला, लेखकके सामग्री बटोरने और कूड़ा बटोरनेमें कोई मेल बैठता है?"

"और लिखना—वह आप कब शुरू कर रहे हैं?" मोड़ूमलने पूछा।

"अभी तो कुछ देर लगेगी ही—कुछ वस्तुएं और जुटानी हैं।"

"मेरे खयालमें तो अगर लेखकोंके लिए एक सोचने-विचारनेकी मशीन भी ईजाद हो जाए, तो आपका काम एकदम आसान हो जाए।"

"सो तो है ही," श्री 'रोशन'ने कहा।

टांकी लेकर वे लोग श्री रोशनसे विदा हो गए और मकानके बाहर आए। खरखरे भाई उन्हें विदा करनेसे पहले अपने घर खाना खिलाने ले गए और उनसे वादा किया कि वह अपनी ही मोटरमें उन्हें छोड़ आएंगे।

(२०)

जब तक मोड़ूमल और मेठूमल पतंगपुरमें अटके रहे, हरा गांवमें कुछ और ही गुल खिलते रहे। सबसे बड़ी घटना जो वहां घटी वह यह थी कि कूंचीरामने हेमपुष्पाकी एक तसवीर पेंट की थी। तसवीर बहुत अच्छी बनी थी और उसे नीचेवाले कमरेकी दीवारपर टांग दिया गया था। उसे देखनेके लिए बहुतसी बौनी लड़कियां इकट्ठी हो गई थीं और उन लोगोंकी पुकार थी कि उनकी भी ऐसी ही सुंदर तसवीरें बनाई जाएं। लेकिन हेमपुष्पा ऊपरवाले कमरेमें किसीको फटकने तक नहीं देती थी, जिसमें कूंचीराम अब अन्नपुष्पाकी तसवीर पेंट करनेमें लगे हुए थे।

बुद्धूमल, जो अब तक कूंचीरामको तरह तरहकी हिदायतें देकर यह जताते घूम रहे थे कि वह पेंटिंगके बारेमें कितना ज्यादा जानते हैं, नीचे शोरशराबा सुनकर दौड़े।

"क्या गुलगपाड़ा है, क्या गुलगपाड़ा है? भागो यहांसे!"

लड़कियां बुद्धूमलकी चिरौरी करने लगीं कि कूंचीरामसे उनकी भी एक एक तसवीर बनवा दी जाए। उनके दुर्व्यवहारपर किसीने ध्यान नहीं दिया।

"तो फिर सब क्यूमें खड़ी हो जाओ, नहीं तो सबको बाहर निकाल दूंगा।"

"अह:, कितने जंगली हो तुम!" हेमपुष्पाने कहा। "यह भी कोई बात करनेका तरीका है। मुझे शरम आती है तुम्हारे ऊपर।"

"तो जाओ, करो शरम," बुद्धूमलने कहा।

उसी समय एक दूसरी बौनी लड़कीने कमरेमें प्रवेश किया और इस धपलेमें वह जीने तक पहुंच गई। उसी समय बुद्धूमलने उसे देखा और एक कुदान भरकर उसकी बांह थाम ली। जब वह रुक गई, तो बुद्धूमल उसके मुंहके सामने उंगली करके हिलाने लगे।

"छूना मत मुझे!" लड़कीने चिल्लाकर कहा "मुझे क्यमें खड़े होनेकी जरूरत नहीं है। मैं कवयित्री हूं।"

यह बात इतने अचानक ढंगसे आई कि बुद्धूमल मुंह बाए खड़े-के-खड़े रह गए और वह खटाखट जीना चढ़कर ऊपर जा पहुंची।

वहां खड़ी अन्य लड़कियोंसे पूछनेपर बुद्धूमलको मालूम हुआ कि कवयित्री वह होती है, जो कविताएं लिखती है। उन्होंने बताया कि उनके यहां भी एक कवि महोदय हैं और उनका नाम है श्री सरगम और यह कि उन्होंने ही उसे कविता करना सिखाया था। जब लड़कियोंने उनसे अपनी कविता सुनानेका अनुरोध किया, तो उन्होंने टालमटोल कर दी। लेकिन हरा गांवकी उस कवयित्रीकी कविता सुननेके लिए वह खटाखट ऊपर जा पहुंचे। कवयित्रीका नाम था मंजरी।

ऊपर कुंवीराम अन्नपुष्पाके चित्रको अंतिम रूप दे रहे थे और मंजरी श्री तानप्रकाशके बराबरमें सोफेपर बैठी बातचीत कर रही थी। बुद्धूमलने अपने हाथ पीठ पीछे बांधे और इधरसे उधर, उधरसे इधर फरशका चक्कर लगाने लगे। जब-तब अलस भावसे वह मंजरीकी ओर देख लेते और फिर चक्कर लगाने लगते।

"अरे, तुम घड़ीके पेंडुलमकी तरह इधरसे उधर काहेको डोल रहे हो?" मंजरीने उनसे कहा। "बैठ जाओ, मुझे तुम्हें डोलते देखकर चक्कर आता है।"

"अपने कामसे काम रखो, नहीं तो मैं कुंवीरामसे कह दूंगा कि तुम्हारा चित्र न बनाए," बुद्धूमलने कहा।

"वाह!" मंजरी आश्चर्यसे बोली, "क्यों, कुंवीरामजी, क्या यह बुद्धूमल आपको हुक्म दे सकते हैं?"

"हां, दे सकते हैं। वह हर चीज दे सकते हैं," कुंवीरामजी अपनेमें मस्त बोले। असलमें उन्होंने सुना ही नहीं था कि बुद्धूमलने कहा क्या था।

"देखा?" बुद्धूमलने कहा, "हरेकको मुझसे आज्ञा लेकर काम करना पड़ता है, क्योंकि मैं ही सरदार हूं।"

जब मंजरीने यह देखा कि बुद्धूमलजी इतने बड़े हैं, तो उसने इरादा किया कि उनसे बनाकर रखी जाए। वह बोली, "अच्छा, तो तुमने ही गुब्बारा बनाया था?"

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"वह देखो, रंग की बाल्टी लिये लड़के आ रहे हैं। आज वे भिगोकर ही मानेंगे। मुझे तो डर लग रहा है!"

"अरे यार, डरता क्यों है? अपने को तो रोज मम्मी पकड़कर बाल्टी में डाल देती है!"

हप्पू

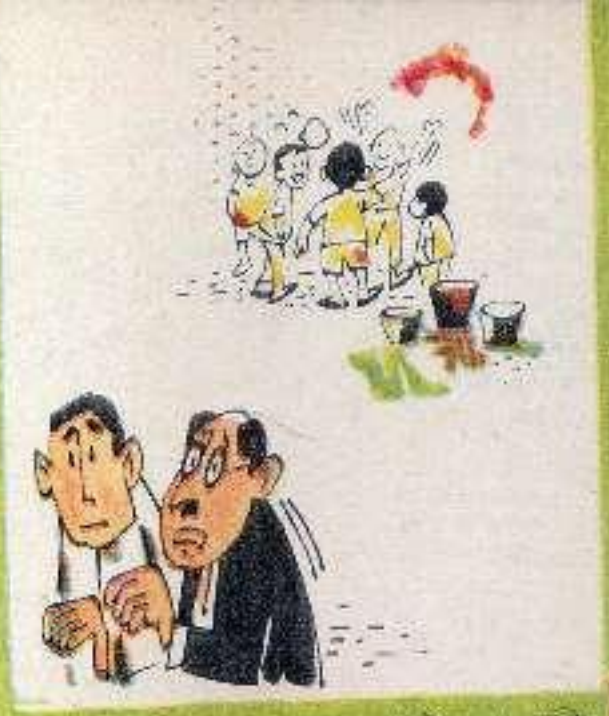

"बवालत का काला कोट आखिर
किस दिन काम आएगा!"

"आओ, अच्छी धौंया होगी ये
अच्छे महल धौं आ पहुंचे!"

"अगर इसने रो रो कर फैल
मर दिए, तो----?"

हुड़दंग!

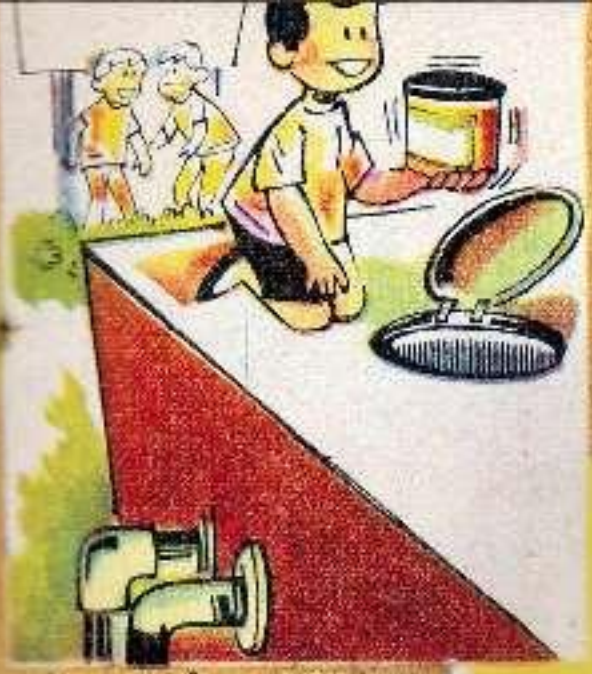

"देखता हूं अब कैसे बचते हैं शहर के लोग!"

का

"पिताजी लेखक हैं तो क्या हुआ! होली के दिन यही उनकी सबसे बड़ी देन मानी जाएगी!"

"सूरदास खल काली कमली, चढ़ै न दूजो रंग!"

राष्ट्रीय एकता

भारतकी सांस्कृतिक परम्परा प्राचीन, समृद्ध एवं विविधताओंसे परिपूर्ण है ।

इस देशके विभिन्न क्षेत्रों की मूर्तिकला, संगीत, नृत्य एवं ड्रामामें मोहित करनेकी अपनी एक विशेषता है ।

भारतीय रेलोंने देशभर में रेल पथों का जाल बिछाकर विभिन्न क्षेत्रों को एक दूसरे से जोड़कर देशकी राष्ट्रीय, भावनात्मक और सांस्कृतिक एकतामें महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है ।

मध्य रेलवे

बुद्धूमलके कारनामे (पृष्ठ ३१ से आगे)

"नहीं तो किसने बनाया था?" बुद्धूमलने कहा।

"किसी दिन मैं तुम्हारे ऊपर कविता लिखूंगी।"

"मुझे कोई कविता-फविता नहीं चाहिए।"

"ऐसा न कहो," मंजरीने कहा, "मैं बड़ी मीठी कविताएं करती हूं—मालूम? कहो तो सुनाऊं तुम्हें एकाध?"

"मरजी हो तो सुनाओ," बुद्धूमलने इस तरह कहा, मानो उन्हें कविता सुननेका कोई चाव ही न हो।

"तो फिर अपनी एक ताजी कविता सुनाती हूं। एक मेंढकके बारेमें है—सुनो :

"एक रोज एक मेंढक मेरे
घर पर आया रे,
कूद-फांद कर उसने मेरा
मन भरमाया रे।

"टर्र टर्र करके वह बोला,
'मैं हूं राजकुंवर,'
रेशम का एक फंदा मैंने
फेंका फिर उसपर।

"उछला-कूदा शोर मचाया,
थककर वह हारा।
बोला, 'मैं ताशेवाला हूं,'
फंस कर बेचारा।

"मैंने उसके सच कहनेपर,
छोड़ दिया फौरन,
जाकर तब अपनी पोथीमें,
तुरत लगाया मन।

"तभी एक मधुमक्खी आई,
उस को छेड़ा जब,
डंक मारते ही मेरा तो
हाल हुआ बेढ़ब!

"झटका मैंने हाथ, पुकारा,
'ओ रे बाबा रे!
अबसे तो बस पढ़ूं-लिखूंगी,
मेरी तोबा रे!'

"वाह, वाह!" कूंचीरामने तालियां बजाईं।

"बहुत बढ़िया कविता है," तानप्रकाशने कहा। "इसमें मेंढकोंके प्रति सद्व्यवहारकी ही नहीं, बल्कि पढ़ने-लिखनेकी शिक्षा भी दी गई है। बहुत सार्थक कविता है।"

फिर तो उत्साहित होकर मंजरीने अपनी और भी कई कविताएं सुनाईं। एकमें पढ़ने-लिखनेके स्थानपर बिस्तरा संवारनेकी बात थी, तो दूसरीमें घरका काम-धंधा देखनेकी सीख थी।

तब तक कूंचीरामने अन्नपुष्पाका चित्र समाप्त कर लिया था। इससे सब बड़े खुश हुए।

मंजरीने कूंचीरामसे कहा, "मेरा चित्र भी नीली पोशाकमें बनाइए।"

"मगर आप तो हरी पोशाक पहने हुए हैं।"

"इससे क्या आता-जाता है? हरीको नीली बना देना तो आपके बायें हाथका काम है। अगर मुझे मालूम होता कि अन्नपुष्पाकी तसवीर नीली पोशाकमें इतनी अच्छी लगेगी, तो मैं नीली पोशाक धारण करके आती।"

"अच्छी बात है, ऐसी ही सही।"

"और मेरी आंखें भी नीली बनाइए।"

"आपकी आंखें—लेकिन ये तो ब्राउन हैं।"

"तो क्या हुआ? अगर आप हरी पोशाकको नीली बना सकते हैं, तो ब्राउन आंखोंको भी नीली कर सकते हैं—कोई नीले रंगकी कमी थोड़े ही है—ए जी, बनाइए न जी!"

"लेकिन पोशाककी बात और है और आंखोंकी और," कूंचीरामने समझाते हुए कहा। "पोशाक बदलनेमें कोई हरज नहीं, लेकिन आंखें बदलनेमें बड़ी गड़बड़ हो सकती है।"

"अच्छा, आंखें ब्राउन ही चलेंगी," मंजरीने कहा, "पर उन्हें जितनी बड़ी हो सकती हैं उतनी बड़ी बनाइए।"

"लेकिन वे तो अब भी काफी बड़ी हैं।"

लेकिन मंजरी नहीं मानी। नतीजा यह हुआ कि कूंचीरामको उसकी पोशाक नीली, आंखें गेंदकी तरह बड़ी बड़ी, पलकें गिलहरीकी पूंछकी तरह लंबी लंबी और बालोंको भूरेसे सुनहरे बनाना पड़ा। तिसपर भी मुंहकी जगह मंजरीने एक छेद भर रखने दिया। चित्रको देखकर कोई नहीं पहचान सकता था कि यह मंजरी है—लेकिन मंजरीकी खुशीका ठिकाना न था। (क्रमशः)

(रूपांतरकार : विनोदकुमार)

मिथिला के बीरबल
गोनू झा

(बच्चो, अकबर बादशाहके मित्र व मंत्री बीरबलका नाम तुमने जरूर सुना होगा। कितने हाजिर-जवाब और जिंदादिल थे वह! आज भी उनके चुटकुले लोगोंको हंसा हंसाकर लोटपोट कर देते हैं। कई सौ वर्ष पूर्व मिथिलामें भी बीरबल जैसे ही एक महाशय हुए हैं—गोनू झा। कैसा भी अवसर हो, गोनू झा अपने हंसोड़ स्वभावके कारण ऐसा वातावरण पैदा कर देते थे कि हंसते हंसते लोगोंके पेटमें बल पड़ जाते।

'पराग' के पिछले कुछ अंकोंमें तुमने उनकी बहुत-सी रंगीन फुलझड़ियां पढ़ी थीं। लो, अब होलीके मौकेपर उनकी कुछ और नई फुलझड़ियां पढ़ो।)

एक थे पंडितजी। वह गोनू झाके निकट पड़ोसमें ही रहा करते थे और जब कथा बांचते, तो रोज एक ही उपदेशपर खास जोर देते। उनका कहना था कि सभी जीव-जंतुओंमें ईश्वरका वास होता है, इसलिए सभी जीवोंको समान रूपसे देखना चाहिए। गोनू झा यह सुनते सुनते परेशान हो गए। आखिर इससे छुटकारा पानेका उन्होंने एक उपाय सोच ही निकाला।

उस दिन पंडितजी और गोनू बाबू किसी दूसरे गांवमें गए हुए थे। एकादशीका दिन था। पंडितजीका प्रवचन सुनकर लोग मुग्ध हो उठे थे। उनके लिए काफी फलाहारका सामान गांववाले वहां रख गए। उस समय पंडितजी किसी भक्तके यहां जा रहे थे। इसलिए उन्होंने गोनू झासे कहा— "गोनू बाबू, मैं जरा इन सज्जनके यहां जा रहा हूं। तब तक आप इसकी देखभाल कीजिएगा। आज मुझे फलाहारपर ही रहना है। जरा ध्यान रखिएगा।" यह कहकर फलाहारके सामानको गोनू झाके सुपुर्द कर पंडितजी चले गए।

इतनेमें एक बकरी आ गई। वह लगी फलाहारके सामानको खाने। गोनू बाबूने कुछ न कहा। धीरे धीरे बकरी सारे सामानको खा गई। बस दो-तीन केले शेष रह गए। इतनेमें पंडितजी भी वापस लौट आए और बकरीकी यह करतूत देखते ही क्रोधके मारे आग बबूला हो उठे। गोनू झाने उन्हें समझाते हुए कहा—"पंडितजी, आप नाराज न हों। सब जीवोंको समान रूपसे देखना चाहिए। सभी जीव-जंतुओंमें ईश्वर का वास होता है। फिर अफसोस क्यों? बकरी भी तो जीव है। उसमें भी ईश्वरका वास है। पछतावा छोड़कर बचे हुए केलोंको ही प्रभुका प्रसाद समझकर ग्रहण कीजिए।"

गोनू झा की बात सुनकर पंडितजी जल-भुनकर राख हो गए। और कर ही क्या सकते थे। लेकिन उस दिनके बाद उन्होंने सब जीवोंकी समानतावाला उपदेश देना बंद कर दिया।

•

एक बार राजाके दरबारमें चार व्यक्ति हाजिर हुए। उनमेंसे एकने राजासे कहा—"सरकार, न्याय चाहता हूं। मरते समय पिताजी वसियतनामा लिख गए हैं। उसमें उन्होंने तीन भाइयोंको ही अपने धनका हिस्सेदार बताया है। लेकिन हम चार भाई हैं। वसियतनामेके हिसाबसे किन तीन भाइयोंको हिस्सा मिलना चाहिए, उनके नाम भी उसमें नहीं लिखे हैं। अब आप

ही फैसला करें कि धन कौनसे तीन भाइयोंको मिलना चाहिए। हम चारों भाई यहां मौजूद हैं।" इतना कहकर उसने वसियतनामेको भी राजा के सुपुर्द कर दिया।

राजाने चारोंको दूसरे दिन बुलाया।

उन्होंने इस समस्या पर काफी मगज-मारी की, पर कोई नतीजा हाथ न लगा। अंतमें उन्होंने गोनू झाको बुलाया और सारी बात उन्हें समझा कर उचित फैसला करनेकी आज्ञा दी। गोनू झा ने उन लड़कोंको एक दिन बुलाया और उनसे कहा—"तुम अपने पिताका कोई चित्र ले आओ।"

चित्र बड़े भाईके पास मौजूद था। उसने निकालकर गोनू झाके सामने रख दिया। चित्र देखकर गोनू झाने कुछ देर सोचा और फिर बोले, "तुममेंसे एक एक आकर मुझसे भीतरवाली कोठरीमें मिलो।" इतना कहकर गोनू झा अंदर-वाली कोठरीमें चले गए।

पहला लड़का गोनू झाके पास गया। गोनू झा-

शैलकुमारी

ने उसे उसके पिताका चित्र दिखाकर कहा, "यह तुम्हारे पिताका चित्र है। जीवन-भर इसने बेईमानी, शैतानीसे धन इकट्ठा किया, मरनेके बाद इसने तुम लोगोंमें झगड़ा लगा दिया। ऐसा पिता क्या कभी पूजनीय बन सकता है? मेरी बात मानो। अपने पिताके इस चित्रपर एक बार थूक दो। ऐसे व्यक्तिकी यही दुर्गति होनी चाहिए।"

गोनू झाकी बात सुनकर वह लड़का मारे क्रोधके तमतमा उठा और बोला, "मैं फैसला कराने आया हूं, अपने पिताजीको बेइज्जत कराने नहीं। मुझे भले ही धन में हिस्सा न मिले, पर मैं ऐसा गंदा काम कभी नहीं कर सकता।" इतना कहकर वह तमतमाता हुआ कोठरीसे निकल गया।

इसी प्रकार गोनू झाने शेष तीनोंको बुलाया। दूसरे और तीसरेने पहले भाईकी तरह ही जवाब दिया। पर जब गोनू झाने वही प्रश्न चौथेसे पूछा, तो उसने कहा—"आप ठीक कहते हैं, महाराज, भला झगड़ा लगाने वाले पिताकी पूजा कौन कर सकता है। ऐसे पिताके चित्र पर मैं एक बार नहीं, सौ बार थूक सकता हूं!" इतना कहकर उस चौथे भाईने अपने पिताके चित्रपर थूक दिया।

दूसरे दिन सभा बुलाई गई। चारों भाई भी उपस्थित थे। गोनू झाने फैसला सुनाते हुए कहा: "इसके पिताने पहले तीन भाइयोंको अपने धन-का हकदार ठहराया है, चौथे भाईको नहीं। चौथा भाई उसकी नजरमें नालायक था।" इतना कहकर गोनू झाने सारा हाल राजाको सुना दिया।

राजाने गोनू झाकी बुद्धिमानीकी खूब तारीफ की।

•

गोनू झाके आंगनके एक कोनेमें काफी सघन तुलसीके पौधे लगे हुए थे। गर्मीकी रात थी और गोनू झा बाहरसे काफी रात गए लौट रहे थे। तुलसीके पौधोंके नजदीक आनेपर उन्होंने उन पौधोंको हिलते-डुलते देखा। उन्हें संदेह हो गया कि हो न हो यहां चोर हैं। भोजन कर लेनेके बाद उन्होंने अपनी पत्नीसे कहा, "सनली हो? आज मेरी चारपाई तुलसीके निकट बिछा दो। बड़ी गर्मी लग रही है। और कहीं तो हवा है नहीं, पर ये पौधे हिलते-डुलते हैं, इससे लगता है कि कुछ न कुछ हवा यहां आती है।"

गोनू झाके कहे अनुसार ही चार-पाई तुलसी के पौधोंके नजदीक बिछा दी गई। कामसे निबटकर पत्नी भी वहीं आकर बैठ गई। दोनों बातचीत करने लगे। बातने बढ़कर झगड़ेका रूप ले लिया।

तैशमें आकर गोनू झाने अपनी पत्नीको एक चपत जमा दी। वह काफी जोरसे रोने लगी। रोनेकी आवाज सुनकर मुहल्लेवाले एक एक करके आंगनमें जमा होने लगे और सभी गोनू झाको बुरा-भला कहने लगे। लोगोंकी संख्या काफी बढ़ गई थी। आंगन जब पूरी तरह भर गया, तो गोनू झाने कहा—"अब आप लोग मेरी भी बात सुनें। देखिए, यह हो सकता है कि

आप लोगोंको मुझपर विश्वास न हो, तो लीजिए, मैं अपनी ओरसे इन गवाहोंको पेश करता हूं।" इतना कहकर पौधोंकी ओट में बैठे हुए चोरोंको उठाकर गोनू झाने लोगोंके सामने पेश कर दिया।

सभी उनकी चालाकीकी तारीफ करने लगे।

•

एक बार राजाने गोनू झासे प्रश्न किया कि ऐसा कौनसा प्राणी है, जो थोड़ेसे ही संतुष्ट हो जाता है और ऐसा कौनसा प्राणी है जिसे चाहे कितना भी दो, संतुष्ट होनेका नाम ही नहीं लेता।"

गोनू झा सोचमें पड़ गए। उन्होंने राजासे चार दिनोंका समय मांगा। राजाने इसे स्वीकार कर लिया।

गोनू झा खूब सोचते थे, पर कुछ हाथ नहीं आ रहा था। एक एक करके दिन गुजरते जा रहे थे। आखिर चौथे दिन वह उदास होकर घरसे निकल पड़े। रास्तेमें उन्होंने कुछ बच्चोंको देखा, जो एक कुत्तेको बुरी तरह पीट रहे थे। जब बच्चे उसे पीटते पीटते थक गए, तो वह मारखाकर एक तरफ बैठ गया। फिर उन्हीं बच्चोंने उसे रोटीका एक टुकड़ा दिखाया। और कुत्ता दुम हिलाता हुआ बच्चोंके पास पहुंच गया। गोनू झा मुस्करा उठे।

फिर गोनू झा वहांसे आगे बढ़े और टहलते टहलते पासके दूसरे गांवमें पहुंच गए। वहांका एक धनी व्यक्ति अपने दामादको विदा कर रहा था। अपनी शक्तिके अनुसार उसने अपने दामादकी विदाई खूब अच्छी तरह की थी। लेकिन इतना होनेपर भी दामाद महाशय संतुष्ट नहीं थे। गोनू झा मुस्करा उठे।

चौथे दिन गोनू झा निश्चित समयपर दरबारमें हाजिर हो गए। उन्होंने कहा—"महाराज, संसारमें एक प्राणी कुत्ता है जो थोड़ेमें ही संतुष्ट हो जाता है और दूसरा दामाद है, जो चाहे कितना भी पा ले, पर संतुष्ट होनेका नाम ही नहीं लेता।"

राजाको भी अपने दामादकी विदाईका अवसर याद आ गया। राजाने काफी विदाई दी थी, पर दामाद संतुष्ट न हुए थे। इससे राजाको क्रोध आ गया। उन्होंने कहा—"ऐसे प्राणीको, जो इतना पाकर भी संतुष्ट होनेका नाम नहीं लेता है, जीनेका अधिकार नहीं है। ऐसे लोगोंको तो मौतके घाट उतार देना चाहिए।"

राजाकी बात सुनकर सभी सोचमें पड़ गए, पर गोनू झाने कहा—"लेकिन महाराज, आप भी तो किसीके दामाद हैं!"

गोनू झाकी बात सुनकर राजा हंस पड़ा और गोनू झाको काफी पुरस्कार दिया।

•

एक बार गोनू झा अपने दोस्तोंमें बैठे हुए थे। वहां हाजिर सभी व्यक्ति गोनू झाको ही उमरके थे। आपसमें जवानी और बुढ़ापेपर बातचीत चल रही थी। गोनू झाको छोड़कर सभी इस बातपर एकमत थे कि जवानी और बुढ़ापेमें काफी अंतर होता है। यह बात गोनू झासे भी पूछी गई। गोनू झाने कहा—"मेरे हिसाबसे जवानी और बुढ़ापेमें कोई अंतर नहीं है। मेरे लिए तो दोनों बराबर हैं।

"यह क्या कह रहे हैं आप! आपके मुंहसे ऐसी बात सुनकर आश्चर्य होता है," कुछ लोगोंने कहा, "आप जरा फिरसे सोचकर देखिए।"

"खूब सोचकर ही मैंने कहा है। अगर ऐसे विश्वास न हो, तो प्रमाण भी दे सकता हूं।"

"हां, हां," सबकी मिलीजुली आवाज आई।

"तो सुनिए, मेरे घरमें मेरे दादा-परदादाके जमानेका एक पत्थर पड़ा है। न उसे मैं जवानीमें उठा सका था और न अब बुढ़ापेमें उठा पाता। फिर मेरे लिए दोनों में क्या फर्क रहा!" गोनू झाने कहा।

गोनू झाके इस उत्तरसे सभी हंस पड़े।

•

एक दिन गोनू झाने अपनी पत्नीसे कहा, "लाओ, मक्खन लाओ। जानती हो मक्खन खानेसे लोग मोटे-तगड़े, स्वस्थ और फुर्तीले होते हैं।"

पत्नीने कहा, "पर घरमें तो मक्खन नहीं है।"

"तो चलो अच्छा ही हुआ। मक्खनमें चिकनाहट अधिक होती है। इससे चर्बी बढ़ती है, और इसी लिए मक्खन खानेसे लोग रोगी और आलसी हो जाते हैं।"

आश्चर्यके साथ पत्नीने कहा, "तुम्हारी किस बातपर विश्वास किया जाए, पहली पर या दूसरी पर?"

"दोनोंपर," गोनू झाने उत्तर दिया, "मक्खन है तो पहलीपर, और नहीं है तो दूसरीपर!"

•

बूझने वाली पहेलियां

रामनारायण उपाध्याय

आओ बच्चो, मैं आज तुम्हें कुछ बूझने वाली पहेलियां सुनाता हूं। इनमें उन्हीं चीजोंका वर्णन है जिन्हें तुम रोज अपने घर-आंगनमें देखते हो। यदि तुम थोड़ा-सा प्रयत्न करोगे, तो इनका उत्तर सहज ही पा जाओगे।

अच्छा बताओ यह क्या है —

'तू चल मैं आया।'

सोचो, जरा विचार करके देखो। नहीं समझ में आया? अरे इसका उत्तर तो सरल है। यह तो दरवाजा है दरवाजा। इसमें एकको खींचते ही दूसरा भी उसके साथ चला आता है। अगर वह नहीं आए, तो मकान बंद ही न हो। इसीसे वह कहता है—'तू चल मैं आया'।

अच्छा तो अब एक दूसरी पहेलीका उत्तर बताओ —

'काली पोनी सफेद धागा।'

यानी पोनीका रंग तो काला है, लेकिन उसमेंसे सफेद धागा निकल रहा है। कोई भी बताओ। देखो, उस बच्चेने सही सही उत्तर बता दिया है— 'भैंसका थन और दूध'। भैंसका थन काला होता है न, दीखता भी है पोनीकी तरह। लेकिन उसमेंसे धागेकी तरह सफेद दूध निकलता है।

अच्छा तो अब एक तीसरी पहेली सुनो—

'खड़े तो खड़े, बैठे तो खड़े।'

यानी वह जब खड़े रहते हैं, तब तो खड़े रहते ही हैं लेकिन जब बैठते हैं तब भी खड़े रहते हैं। है ना अजीब बात। क्या कहा—झूठ? नहीं, एकदम सच बात है। देखो ये हैं— 'गाय के सींग'। गाय जब खड़ी रहती है, तो तब भी ये खड़े रहते हैं और जब बैठ जाती है, तब भी उन बचारोंको तो खड़े ही रहना पड़ता है।

अच्छा तो इसका उत्तर तो तुम्हें मालूम ही होगा —

'जब देखो तब कमर बांध कर खड़ी, काम पड़े तो आड़ी।'

यानी वह बिना कामके तो कमर बांध कर खड़ी रहती है लेकिन जब काम पड़ता है, तो आड़ी लेट जाती है।

देखो, उस लड़कीने बाजी जीत ली। कितनी जल्दी उसने उत्तर बता दिया—'झाड़ू।'

ठीक है ना? जब इसका काम नहीं पड़ता, तब वह कमर कसकर कोनेमें खड़ी रहती है, लेकिन जब घर बुहारना होता है, तब उसे बिना तिरछा किए झाड़ू नहीं लगती।

क्या कहा— यह लड़कियोंकी पहेली है। अच्छा तो एक लड़कोंकी पहेलीका उत्तर दो —

'चार भाई एक छतके नीचे खड़े हैं।'

संभव है आपके भी कमरेमें खड़े हों। जरा जल्दी कीजिए। उनके पांव पिरा रहे हैं। नहीं समझमें आया। अरे ये तो 'टेबिल है टेबिल'। इसमें चारों पाए एक ही तख्तेके नीचे खड़े रहते हैं।

और सुनो यह कोई कबीरकी उलटबांसी नहीं है। बच्चोंकी ही एक पहेली है—

'नावके भीतर नदी, नदीके भीतर नाव।'

कई बार ऐसा होता है कि जो चीज बहुत पास है, उसे हम देख नहीं पाते और यदि देखनेकी ही चीज हो, तब तो और भी मुश्किल। देखो उस भाईने आंखका इशारा करके बता दिया। अरे ये तो 'आंख' है। नावमें नदीकी तरह आंखोंमें पानी भरा रहता है और नदीमें नावकी तरह आंखोंके पानीमें पुतलियां तैरती रहती हैं।

अच्छा, एक विनोदमय पहेली भी सुनो—

"लड़का पेटमें, दाढ़ी हवामें।"

मजाक नहीं, सच बात है। अगर कभी तुम गांवमें गए हो और फसलोंके दिन वहांके खलि-

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

दादाजीने सोच लिया कि अब चुप बैठकर अपने दिन काट देनेमें ही भलाई है। बुजुर्गोंका जमाना ही नहीं रहा। कोई समय था कि बड़े-बूढ़ोंकी सलाहके बिना कोई काम न होता था। लेकिन अब? कल ही राजू कह रहा था—'दादाजी, आपको तो जमा-घटाके सवाल भी नहीं आते, आप हमारी बातमें मत बोला करें।'

हुआ यह था कि राजू और पिंकीमें किसी हिसाबके सवालको लेकर झगड़ा हो गया था। बात मार-पीट तक पहुच गई। दादाजीने उन्हें अलग करनेकी चेष्टाकी, तो उन्हें ये शब्द सुनने पड़े।

राजू फेल होकर चौथीमें रह गया था।

कहानी

हवाई हमला

अवतारसिंह

पिंकी तीसरीमें प्रथम आकर चौथीमें चढ़ी थी। एक ही स्कूल, एक ही कक्षा, दोनों का आए दिन किसी न किसी बातपर झगड़ा लगा रहता।

दादाजीने तय कर लिया था कि अब वह किसीके बीचमें नहीं पड़ेंगे। जब बच्चोंके मां-बाप ही उनकी परवाह न करें तो उन्हें क्या जरूरत है अपनी जान खपानेकी।

उन्हीं दिनों एक ऐसी घटना हुई कि दादाजी को लगा कि वह अपना खोया महत्व फिर प्राप्त कर सकते हैं।

पाकिस्तानने भारतपर हमला कर दिया था। सीमापर लड़ाई शुरू हो गई थी। शहरोंपर हवाई हमले होने लगे थे।

हवाई हमलेका साइरन बोलता, पर सब सोते ही रहते। डैडी कहते—'अजी, दिल्ली तक उनका जहाज आ ही नहीं सकता!' पर एक सुबह जब पाकिस्तानी हवाई जहाज दिल्लीके पास नीचे गिरा लिया गया, तो सब चेते। सबको खतरेका एहसास हो गया। दादाजीने सारी रात जागते रहनेका निश्चय किया, ताकि साइरन बजते ही सबको जगा दें। दादाजी दिनमें खूब सो सकते थे, उन्हें रात भर जागनेमें कोई परेशानी न दीखी।

मम्मी और डैडीने छतपर सोनेका निश्चय किया, ताकि साइरनकी आवाजसे उनकी नींद खुल जाए। दादाजीने अपने लिए बच्चोंकी चारपाईयोंके पास दालानमें एक आराम-कुर्सी डलवा ली।

चारपाईकी जरूरत उन्होंने नहीं समझी। उन्हें कौन सोना था? पास ही स्टेशन था। रेलोंका धड़धड़ाना सुनते सुनते दो-एक झपकी लग जाएं, तो बात दूसरी है।

मुन्नू, राजू, पिंकी गप्पें मारते मारते दस बजे तक सो गए। मम्मी और डडी छतपर चले गए। रह गए अकेले दादाजी।

पहले तो वह छड़ी लिये दालानमें घूमते रहे। फिर गलीमें निकल आए। चांदनी रात

थी। सब कुछ धुंधला-सा दिख रहा था। उन्हें यों लग रहा था मानो उनके कारण ही सारा मुहल्ला मौतके मुंहमें जानेसे बचा हुआ है। काफी देर वह घूमते रहे। पर साइरन तो क्या बजना था, जरा-सी भी आहट नहीं हुई। कोई चोर भी तो नहीं आया। उकताकर दादाजी आराम-कुर्सी पर लेट गए।

थोड़ी देर बाद ही उनकी पलकें भारी होकर मुंद गईं। खर्राटोंसे आंगन गूंजने लगा।

"कू ऊ ऊ ऊ . . .कू ऊ ऊ ऊ . . .कू ऊ ऊ ऊ . . ."

आवाज सुनकर दादाजी चौंककर जाग गए। एकदम चुस्तीसे उठ खड़े हुए। पास लेटे, मुन्नू, राजू, पिंकीको जगाया। मुन्नने अलसाए हुए कहा, "क्या है, दादाजी, अभी सवेरा कहां हुआ है?"

"बको मत! अभी अभी खतरेका साइरन बोला है।"

सुनते ही तीनों बच्चे दालानसे यों अंदर भागे, मानो सोए ही न थे। दादाजी भी छड़ी उठा कर अंदर चले आए।

जैसा कि मम्मी और डैडीने बताया था, तीनों बच्चे भागकर अंदरवाले कमरेमें जा बैठे थे। दादाजी कमरेमें घुसते ही कड़के : "अरे! यह बत्ती किसने जलाई? गधे, अक्ल तो जैसे घोलकर पी गए हैं?"

"दादाजी, यहांसे तो जरा-सी भी रोशनी बाहर नहीं जाती," राजूने कहा। पर दादाजी स्विच दबाते हुए बोले, "मोमबत्ती लाओ। दियासलाई मेरी जेबमें है।"

तीनों अंधेरेमें मोमबत्ती ढूंढ़ने लगे। पिंकी बोली, "मम्मीने ताक पर रखी थी।"

"पापाने मेरे सामने लाकर अलमारीमें रखी है," राजूने उसकी बात काटी।

"पापा मोमबत्तियां लाए ही नहीं। झूठ बोलता है।"

"तू होगी झूठी!" राजूने उसकी चुटिया पकड़ ली। पिंकीने उसके बाल खींचे। दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। खटर-पटर सुनकर अंधेरेमें टटोलते हुए दादाजी बोले, "कैसे नालायक हैं! खतरेमें भी लड़ते रहते हैं। पूरा देश एक हो जाए, पर पिंकी और राजू कम्बख्त दो ही रहेंगे। हटो परे. . .अरे, कहां लड़ रहे हो? मुन्नू भाई, ताकपरसे मेरा चश्मा तो ला। हटाऊं इन गधेके बच्चोंको!"

"पर, दादाजी, चश्मा लगानेसे अंधेरेमें थोड़े ही दिखने लगेगा!" मुन्नू बोला। सुनकर पिंकी और राजू भी हंसने लगे। तभी मुन्नका पैर किसी चीजपर पड़कर फिसला और वह चीखा : "मिल गई, मिल गई, दादाजी, मोमबत्ती मिल गई!"

मोमबत्ती जलाई गई। ताकपरसे चश्मा उठाते हुए दादाजी बोले, "मुन्नू, आजका अखबार तो ला। उसमें छपा है —एयर रेड होने पर क्या करें?" मुन्नने अखबार ला दिया।

दादाजी रोबीले स्वरमें बोले, "जो मैं बोलूं, बिना हीलो-हुज्जतके तुरंत करते जाना।"

अखबार पढ़ते हुए दादाजी बुदबुदाए : "खुलेमें हों, तो औंधे मुंह लेट जाना चाहिए।"

आखिरी शब्द सुनकर तीनों बच्चों झट फर्शपर लेट गए।

"हां, तो सुनो, सब अपने अपने कानोंमें रूई ठूंस लो।" दादाजीने अखबार परसे नजरें जो उठाईं तो आश्चर्यसे बोले, "अरे तुम लोग फर्शपर ही लेट गए?"

"आपने ही तो कहा था!" तीनों एक साथ बोले।

"मैंने? कब? . . .चलो, उठो झटपट पहले कानोंमें रूई ठूंसो।"

"पर रूई कहां है?" पिंकी बोली।

"ओफ्फोह! अभी तक सोए पड़े थे! खतरा सिरपर मंडरा रहा है, यहां रूईका पता नहीं। एक तकिया फाड़ लो ब्लेडसे।"

तकिया फाड़ा गया। सबने कानोंमें ठूंस ठूंसकर रूई भर ली। "अब दांतोंमें कोई कपड़ा दबा लो," दादाने अगली हिदायत पढ़ी।

राजूने हाथ हिलाकर कहा, "दादाजी, कान

सभी अवसरों
के लिए
बिस्कुट
शालीमार
बिस्कुट
शालीमार बिस्कुट्स प्रा. लि.
सन मिल रोड, बम्बई - 13
Telstar - SB/-30

में रुई ठुंसी है, सुनाई नहीं पड़ता।"

"क्या कह रहा है?" दादाजीने कान खुजलाया। उनके कानमें भी रुई ठुंसी थी।

"दादाजी, सुनाई नहीं देता," राजूने फिर हाथ हिलाया।

"अबे, ऊंचा बोल! मुंहमें जबान नहीं है क्या?" दादाजी क्रोधसे लाल हो गए।

पिंकी चतुर थी। उसने आगे बढ़कर दोनोंके कानोंमेंसे रुई निकाल दी। झेंपे हुए दादाजीने तय किया कि पहले दूसरी सावधानियां पूरी कर लें, तब कानोंमें रुई डालेंगे।

दांतोंके बीचमें दबानेके लिए तुरंत कोई कपड़ा न मिला, तो मम्मीकी साड़ीके कई टुकड़े करके काम चलाया गया। प्राणोंके आगे साड़ीका क्या मूल्य!

दादाजीने आगे पढ़ा—"सबसे सुरक्षित जगह कमरेका कोना है।" तीनों बच्चोंको तीन कोनोंमें खड़ाकर चौथेमें स्वयं खड़े होकर दादाजीने अंतिम सावधानी अपने आप गढ़ी, "सब कानोंमें रुई ठूंस लो। फिर बारी बारीसे मुंहमेंसे कपड़ा निकालकर पांच पांच बार जोर से 'हरे राम, हरे राम' बोलो।"

पहले दादाजीने ही पांच बार गरजकर गगनभेदी स्वरमें 'हरे राम, हरे राम' कहा, जो बच्चोंको कानोंमें रुई ठूंसे होनेके बावजूद दहाड़ेसे सुनाई आता रहा। फिर पिंकीकी बारी थी। वह भी परे जोरसे 'हरे राम, हरे राम' बोली। फिर तो चारोंमें जैसे होड़ लग गई कि कौन जोरसे बोलता है।

इस गर्जनासे गलीके कुत्ते भौंकने लगे। रोशनदानमें बने घोंसलेसे कबूतर और कबूतरी घबराकर उड़ गए। रोटीका टुकड़ा कुतरते चूहे दौड़कर बिलोंमें घुस गए।

अचानक राजू चीखा: "अरे, मम्मी और डैडी तो अभी छतपर ही सो रहे हैं?"

"कैसे घोड़े बेचकर सोते हैं!" कहते हुए दादाजी दरवाजेकी ओर लपके, पर कमरेमें घुसते हुए डैडीसे टकरा गए। मम्मी भी पीछे पीछे आ गईं। उनकी बात सुननेके लिए सबने कानोंमेंसे रुई निकाल ली। डैडी बोले, "क्या बात है, पिताजी? यहां शोर क्यों हो रहा था? बच्चे कहां हैं?"

"सब सुरक्षित हैं। तुम लोग खतरेका साइरन सुनकर नीचे क्यों नहीं उतरे?"

"साइरन! क्या हमलेका साइरन बोला है?"

"और नहीं तो क्या!" दादाजीने मुंह बिचकाया।

"अच्छा! लेकिन रामलाल और शिवचरन तो परिवारों सहित अपनी अपनी छतों पर खर्राटे ले रहे हैं।"

"सब कुएं में गिरेंगे, तो..."

"कू ऊऊऊऊऊ...!" तभी आवाज आई।

"देखो देखो, फिर बोला!" दादाजी चौंककर बोले।

डैडीने माथा ठोंककर कहा, "ओहो! आप भी न सोते हैं, न सोने देते हैं। यह तो रेलके इंजिनकी आवाज है, कहीं पास ही शंटिंग कर रहा होगा।"

सुनते ही सब बच्चे जो खिलखिलाकर हंसे, तो दादाजीकी आवाज दब गई, जो कह रहे थे—"लो, मैं तो समझा कि यही साइरनकी आवाज है। आखिर इन लोगोंकी भी कोई फरक रखना ही चाहिए। न हो इन दिनों शंटिंग ही बंद रखें।" लेकिन दादाजीके सुझावपर रेलवेवाले ध्यान दें, तब तो। ●

रंगों की दावत (पृष्ठ १३ से आगे)

रुपयेका नोट उसके हाथमें पकड़ाया और साइकिल उठा लपके घरकी तरफ।

जब वह घरके पास पहुंचे, तो दमड़ीमलके घरका दरवाजा सजा हुआ था। घरके सामने चटाई बिछी हुई थी। उन्होंने अपने घरमें साइकिल पटकी, कपड़े झाड़े और मुसकराते हुए दमड़ीमलके घरकी ओर बढ़े। वहां पहुंचकर चप्पल उतारीं और पैर साफ करनेके लिए चटाईके बीचोंबीच रखे पा-पोशपर पांव रखनेको कूदे—छपाक! छपाक!

एक रंगसे भरे गड्ढेको चटाईसे ढका हुआ था, और अब कल्लन मियां रंगसे सराबोर थे। जैसे ही मियां कान झाड़ते हुए बाहर निकले, रंगसे भरी कई पिचकारियां एकाएक उनके मुंह पर पड़ीं। तभी सामने बबली नजर आया। कल्लन मियांका पारा एकदम आठवें आसमानपर चढ़ गया—"क्यों बे, बबलीके बच्चे! दावत कहां है! कहां है...?"

बबली आहिस्तासे बोला—"दावत तो थी, पर खानेकी नहीं, रंगोंकी!" ●

आजसे कई सौ बरस पहले भूख और गरीबीसे तंग आकर तीन व्यक्ति डाका डालनेको निकले। वह सुनसान राहोंको रौंदते हुए जा रहे थे कि उन्होंने एक सवारको अपनी ओर आते हुए देखा। सवारने उनके निकट आकर सलाम किया। कबाइली रिवाजके अनुसार कुछ देर तक वे एक दूसरेकी कुशलता पूछते रहे।

सवार उनके रंग-ढंग और अस्त्र-शस्त्रको देखकर कुछ भयभीत-सा हो रहा था, इसलिए कुशल-क्षेम पूछनेके बाद वह तुरंत घोड़ेपर सवार होकर चल दिया। एक लुटेरेने गर्वसे कहा, "सवारने मेरे डील-डौल और सुंदर शरीर-को देखकर मुझे सलाम किया है।" इसपर बाकी दो लुटेरे बिगड़ बैठे और उनमें 'तू-तू मैं-मैं' होने लगी। अंतमें उन्होंने निश्चय किया कि वे सब जाकर सवारसे ही यह पता करें कि उसने किसे सलाम किया। वे दौड़ते हुए सवारके पीछे चल पड़े।

सवार निकटके एक गांवमें उतरा। वहां वह कुछ लोगोंसे बातें कर ही रहा था कि तीनों लुटेरे भी हांफते हांफते पहुंच गए। सवार उन्हें देखकर बहुत परेशान हुआ। उसे आशंका हुई कि वे केवल उसे लूटनेके लिए ही यहां तक आए हैं। लुटेरोंने इसके बिल्कुल विपरीत निकट आकर एक स्वरमें कहा, "हम आपसे केवल एक सवाल पूछनेके लिए यहां तक भागते हुए आए हैं—क्या आप हमें यह बतानेके कष्ट करेंगे कि आपने हममेंसे किसे सलाम किया था?"

"मैंने तुम तीनोंमेंसे सबसे बड़े मूर्खको सलाम किया था," सवारने कुछ सोचकर जवाब दिया।

यह उत्तर सुनते ही तीनों एक दूसरेको प्रश्न-भरी नजरोंसे देखने लगे। पर उनकी समझमें कुछ न आया। आखिर उन्होंने निश्चय किया कि वे बारी बारीसे अपनी अपनी मूर्खताकी कहानी सुनाएं और सवार खुद निश्चय करे कि कौन सबसे बड़ा मूर्ख है।

आपबीती : पहले मूर्खकी

पहले लुटेरेने अपनी आपबीती यों शुरू की : "आजसे कुछ दिनों पहले सर्दियोंमें जब लगातार बरफ गिरनेके कारण सारी धरती सफेद हो गई थी और तेज और तीखी हवाएं चल रही थीं, तो मैं गर्म बिस्तरमें लेटा इन हवाओंके संगीतका आनंद ले रहा था कि तभी हवाके एक धक्के-से दरवाजा खुल गया। मैंने अपनी बीवीको जगाते हुए कहा कि वह दरवाजा बंद कर दे। पर मेरी भली बीवी इतनी सुस्त निकली कि उसने तुरंत उत्तर दिया : 'दरवाजा तुम स्वयं ही क्यों नहीं बंद कर देते!'

"मैंने दरवाजा बंद करनेके लिए फिर निवेदन किया, पर वह अपनी जिदपर अड़ी रही। अंतमें उसने यह प्रस्ताव रखा कि हम दोनोंमेंसे अब जो कोई पहले बात शुरू करेगा, उसे ही दरवाजा बंद करनेके लिए उठना पड़ेगा। बस हम दोनोंने मौन धारण कर लिया और चुप-चाप अपने अपने बिस्तरों पर लेटे रहे। इतनेमें एक चोर, जो बहुत देरसे पति-पत्नीकी बातें सुन

बलोची लोक-कथा

सबसे बड़ा मूर्ख

प्रस्तुतकर्ता - सुरजीत

www.kissekahani.com

रहा था, कमरेमें घुसा। हम दोनोंने उसे देखा, पर न तो मैं बोला और नहीं मेरी बीवी ने मुंहसे कोई बात कहनेका साहस किया। हम दोनोंको यह डर था कि जो बात शुरू करेगा, उसे ही दरवाजा बंद करनेका कष्ट सहन करना होगा। तभी चोर बड़ी बेफिक्रीसे सभी वस्तुओंको एक गठरीमें बांधने लगा। हम उसकी हरकतोंको देखते रहे, फिर भी चुप रहे। चोर वह गठड़ी मकानके बाहर रखकर पुनः अंदर आया। इस बार उसने तवा उठाया और अपनी दोनों हथेलियां काली कीं।

"मैं लेटा लेटा बड़े ही आश्चर्यसे उसकी इन हरकतोंको देख रहा था। हाथ काले करनेके बाद उसने स्याही मेरे मुखपर मल दी। मैं चुपचाप देखता रहा। फिर वह मेरी बीवीके बिस्तरके निकट गया। वहां भी उसने यही किया और बड़ी निश्चिंततासे कमरेसे बाहर निकल गया।

"हम दोनों चुपचाप लेटे रहे। हमें अपने चेहरोंकी कालिमाकी कोई चिंता नहीं थी। डर था तो केवल यही कि बात करनेसे कहीं दरवाजा बंद करनेके लिए गर्म बिस्तरसे न उठना पड़े।

"ठंडी और शरीरको छेद डालने वाली हवाएं कमरेमें प्रवेश कर रही थीं, पर हम अपनी जिदके पक्के निकले और यों ही लेटे लेटे कुछ देर के बाद हम सो गए।

"सवेरा हो गया था। सूर्यकी किरणें अंदर आने लगीं। हम सपनेसे जागे, पर हमने तो मौन-व्रत रखा हुआ था और बात न करनेकी प्रतिज्ञा की हुई थी। किंतु मेरी बीवी मेरे काले मुखको देखकर संयम न रख सकी, वह तुरंत चिल्ला उठी: 'अरे तुम्हारा मुख तो उलटे तवेकी तरह काला हो चुका है!' मैं प्रसन्नतासे उछल पड़ा और ठहाका लगाते हुए बोला, 'तुम हार गई हो . . . जाओ, अब दरवाजा बंद कर दो।' लेकिन चोर तो सब कुछ ले जा चुका था।"

पहले लुटेरेने अपनी आपबीती खत्म करते हुए सवारको आशा-भरी नजरोंसे देखा, पर सवारने तुरंत ही दूसरे लुटेरेको अपनी मूर्खताकी कहानी सुनानेके लिए कहा।

आपबीती : दूसरे मूर्खकी

दूसरे लुटेरेने अपने सिरपर हाथ फेरते हुए कहा : "भाइयो, मेरी मूर्खताकी कहानी रोचक भी है और दर्द-भरी भी। शायद यह सुननेके बाद आप सब मुझे मूर्खोंके बादशाहकी उपाधि दे दें और मैं अजनबी सवारके सलाम का हकदार बन जाऊं और . . ."

पहले लुटेरेने उसकी बात काटते हुए कहा : "व्यर्थकी भूमिका बांधनेके बजाय अपनी कहानी सुनाओ।"

दूसरे लुटेरेने अपनी कहानी आरम्भ की : "दुर्भाग्य या सौभाग्यसे मैंने दो शादियां कीं। दोनों स्त्रियां आम सौतोंकी तरह लड़ने-झगड़नेमें मग्न रहती थीं, पर मेरी सदासे यही इच्छा रही कि उनसे न्यायसंगत और समानताका व्यवहार करूं, ताकि उन्हें मुझसे कोई शिकायत न हो। एक दिन मैं घरमें बैठा खाना खा रहा था कि मेरी पहली बीवी मेरे निकट आकर बैठ गई। वह मेरे बालोंको ध्यानसे देख रही थी और मैं खाना

खानेमें मगन था। न जाने उसे क्या सूझी कि उसने उदास स्वरमें कहा, 'तुम्हारे सिरमें यह सफेद बाल कितना बुरा लग रहा है। काश बाल सदा काले और चमकदार रहते!'

"मैंने कहा, 'अगर तुम्हें इस सफेद बालके कारण दुःख हुआ है, तो कमबख्तको निकाल दो।"

"वह प्रसन्न हो गई और उसने बड़ी निर्ममतासे सफेद बाल नोच डाला। इतनेमें मेरी दूसरी बीवी भी आ गई और निकट बैठकर शिकायतभरे स्वरमें कहने लगी—'इस डायनने आखिर वह सफेद बाल निकाल ही दिया, जो तुम्हारी प्रतिष्ठा और बुजुर्गीका निशान था।'

"डायनका शब्द सुनते ही मेरी पहली बीवी बिगड़ गई और करीब था कि दोनों आपसमें गुत्थम-गुत्था हो जाएं कि मैंने दूसरी बीवीको समझाते हुए कहा—'झगड़ेसे क्या लाभ होगा। तुम भी एक बाल निकाल लो।"

"उसने ऐसा ही किया। अब पहली बीवी नाराज हुई और कहने लगी कि उसने तो केवल सफेद बाल निकाला था, उसे भी एक काला बाल निकालनेकी अनुमति दी जाए। मैंने सिर झुका दिया, और उसने मेरे सिरसे एक काला बाल निकाल लिया। मैं समझ रहा था कि चलो बात यहीं समाप्त हो जाएगी, पर दूसरी बीवी कहने लगी—'मैंने केवल एक बाल ही नोचा, और उसने दो बाल . . अब तुम मुझे भी अनुमति दो कि. . .'

"मैंने उसकी बात काटते हुए कहा, 'लो तुम भी अपना शौक पूरा कर लो।'

"इस प्रकार दोनों बीवियोंमें झगड़ा जारी रहा और एक दूसरेकी दुश्मनीने आखिर मेरा सिर गंजा कर दिया। प्रातः जब मैंने आईना देखा, तो मेरे सिरपर एक भी बाल न था। मैं समझा था कि मेरे गंजे हो जानेके बाद दोनों स्त्रियोंके झगड़े खत्म हो जाएंगे, पर खेद है कि ऐसा न हुआ। मैं बालोंसे भी हाथ धो बैठा और बीवियोंको भी खुश न कर सका। भाइयो, यह है मेरी मूर्खताकी कहानी।"

आपबीती तीसरे मूर्खकी :

अब तीसरे लटेरेने ठंडी सांस लेते हुए कहा : "दोस्तो, पहले मैं बहुत धनी था, पर अपनी मूर्खताके कारण मुझे यह दिन देखने पड़े। आजसे कुछ बरस पहले मेरे पास भेड़ों और बकरियोंकी एक खासी संख्या थी और मैं आरामका जीवन बिता रहा था। एक दिन जब मैं वनमें भेड़-बकरियोंको चरा रहा था, तो एक हंसमुख व्यक्ति गीत गाता हुआ उस वनमेंसे गुजरा। मैंने उसे मेहमानके रूपमें रोक लिया और उसके आतिथ्य-सत्कारमें कोई कमी न रखी। जब वह मुझसे विदा होने लगा, तो मैंने उससे प्रार्थना की कि अब तक मैं कुंवारा हूं। यदि वह मेरी शादीका प्रबंध कर दे, तो मैं उम्र भर उसका आभारी रहूंगा।"

"आगन्तुकने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, 'यह कोई मुश्किल बात नहीं। मैं शीघ्र ही तुम्हारी शादीका प्रबंध करके तुम्हें सूचना दूंगा।"

"वह चला गया और मैं मनमें सुंदर सपनोंका संसार बसाए उसके आगमनकी प्रतीक्षा करता रहा। कुछ दिनके बाद वह लौटा, तो उसे देखकर मेरे चेहरेपर प्रसन्नताकी लहर दौड़ गई। उसने मुझसे गले मिलते हुए कहा—'बधाई लो, मैं तुम्हारी मंगनीकी पवित्र रस्मको पूरा कर तुम्हें शुभ समाचार सुनाने आया हूं।'

"यह सुनते ही मैं प्रसन्नतासे नाच उठा और मैंने अपनी भेड़-बकरियोंका तीसरा भाग उसे पुरस्कारके रूपमें दे दिया। वह मेरी उदारताकी प्रशंसा करते हुए विदा हुआ। अगले बरस वह फिर आया और कहने लगा, 'मैं अभी अभी तुम्हारी शादीकी रस्में निपटाकर आ रहा हूं। गांवकी सभी स्त्रियां तुम्हारी पत्नीके रूपकी प्रशंसा कर रही हैं।'

"मैंने उसे गले लगा लिया और बाकी बची भेड़-बकरियोंका तीसरा भाग उसे दे दिया। वह प्रसन्न होकर मुझसे विदा होकर चला गया। तीसरे बरस वह फिर आया और आते ही बोला, 'मेरे मित्र, बधाई लो, तुम्हारे घर लड़का पैदा हुआ है।' अब मैं धीरज न रख सका, और बहुत कठोर स्वरमें बोला, 'मेरी मंगनी भी हो चुकी। शादी भी निश्चित हो गई। बच्चा भी हो गया, पर आश्चर्यकी बात तो यह है कि मैंने न तो पत्नीको देखा, न बच्चेको, इसलिए इस बारमें तुम्हें कोई पुरस्कार न दूंगा, जब तक कि तुम मुझे मेरी पत्नीका पता ठिकाना न बता दोगे।"

"आगन्तुकने मुस्कराते हुए उत्तर दिया : 'मूर्ख, मैं तुम्हें तुम्हारी पत्नीके पास ही तो ले जानेके लिए आया हूं, और तुम हो कि आपेसे बाहर हुए जा रहे हो!'

"मैंने उतावलेपनपर खेद प्रकट किया और उसको बाकी बची भेड़-बकरियां भी दे दीं। अब मेरे पास कुछ भी न रहा था, पर मैं इस बात पर प्रसन्न था कि यह सब कुछ खोकर मैं एक सुंदर पत्नीका पति और एक नन्हे-मुन्ने बच्चेका पिता कहला सकूंगा।

"वह मुझे निकटके गांवमें ले गया। वहां एक झोंपड़ीके निकट एक स्त्री बैठी बच्चेको नहला रही थी और बच्चा रो-रोकर बुरा हाल कर रहा था। उसने रुकते हुए कहा—'वह रही तुम्हारी पत्नी . . .जाओ, और उसके साथ नए जीवन का आरंभ करो।'

"इतना कहकर वह चला गया और मैं तेज कदम उठाता हुआ अपनी पत्नी और बच्चे-से मिलने चला। स्त्री सुंदर थी और बच्चा गोल-मटोल। मैं कुछ देर तो उन्हें टकटकी बांधे देखता रहा। फिर मुझसे रहा न गया और मैंने स्त्री-से कहा—'भलीमानस, तुझे बच्चेको चुप कराने-का ढंग भी नहीं आता।'

"वह चुपचाप बच्चेको नहलानेमें मगन थी। उसने मेरी बातपर कोई ध्यान देनेकी जरूरत ही नहीं समझी। मुझे उसकी इस उपेक्षापर गुस्सा आ गया और मैंने क्रोधमें स्त्रीको कसकर एक थप्पड़ मारा। स्त्री तिलमिला उठी और उसने शोर मचा दिया। शोरगुल सुनकर अड़ोस-पड़ोस-की स्त्रियां और पुरुष इकट्ठे हो गए। स्त्रीने सारी बात कह सुनाई। अतः मुझे बुरी तरह पीटा गया। पिटाईके बाद किसीने मुझसे वहां आनेका कारण पूछा। मैंने बहुत भोलेपनसे उत्तर दिया: 'यह स्त्री मेरी पत्नी है और यह मेरा बच्चा। इनके लिए मैं अपना सारा धन लुटा चुका हूं। अब मैं सदा सदाके लिए इनके साथ रहने आया हूं।'

"मेरा यह कहना था कि एक बार फिर मुझे निर्दयतासे पीटा गया, और मेरे हाथ-पांव एक रस्सेसे बांधकर सरदारके पास ले जाया गया, जहां स्त्रीके रिश्तेदारोंने मुझ पर चोरीका आरोप लगाया और मुझे वर्षों कारावासमें रहना पड़ा।

"बस मेरी मूर्खताकी कहानी इतनी-सी है।"

उस सवारने यह कहानी सुनकर कहा, "मैंने तुम्हें ही सलाम किया, तुम ही महामूर्खकी उपाधि पानेके हकदार हो, क्योंकि तुमने अपनी पत्नी या बच्चेको देखे बिना अपना सारा धन लुटा दिया।" (एक बलोची लोक-कथापर आधारित) ●

मनोरंजक प्रश्नोत्तर

प्रश्न: एक खाली झोलेमें कितनी पुस्तकें आ सकती हैं?

उत्तर: केवल एक, क्योंकि उसके बाद तो झोला खाली नहीं रहता।

प्रश्न: कुत्तेके दोस्त इतने अधिक क्यों होते हैं?

उत्तर: क्योंकि वह जबान न हिलाकर दुम हिलाता है!

प्रश्न: घड़ीकी बड़ी सुई छोटी सुईसे क्या कहती है?

उत्तर: मैं एक घंटे बाद फिर आऊंगी!

प्रश्न: मुर्गीके किस ओर अधिक पंख होते हैं?

उत्तर: बाहरकी ओर!

प्रश्न: गुम हुई वस्तु हमेशा आखिरी स्थानपर क्यों मिलती है?

उत्तर: क्योंकि उसके पश्चात हम ढूंढ़ना बंद कर देते हैं!

प्रश्न: हम सब एक साथ हर समय क्या कर रहे होते हैं?

उत्तर: आयुमें बढ़ रहे होते हैं!

प्रश्न: ऐसा कौनसा शब्द है जिसे सदा गलत पढ़ा जाता है?

उत्तर: गलत!

प्रश्न: पप्पूने एक सेब खाया और काटते ही देखा कि उसमें एक कीड़ा था। इससे बुरा क्या हो सकता था?

उत्तर: अगर पप्पू देखता कि उसमें केवल आधा कीड़ा है!

प्रश्न: उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव-में क्या अंतर है?

उत्तर: बीचकी सारी दुनियाका!

प्रश्न: मोटर और रेलगाड़ीकी रफ्तार कब एकसी होती है?

उत्तर: जब मोटर रेलगाड़ीपर लदी हुई हो!

प्रश्न: एक छातेके नीचे दस आदमी खड़े थे, फिर भी कोई भी नहीं भीगा, क्यों?

उत्तर: वर्षा नहीं हो रही थी!

—इंद्रजीत

(आदमी कभी पांवसे चलता था, अब पंखोंसे उड़ता है। लेकिन यह कैसे संभव हुआ? इसीकी कहानीकी दूसरी किस्त तुमने पिछले अंकमें पढ़ी थी। लो अब तीसरी पढ़ो। —संपादक)

पांव से पंखों तक

—हरिकृष्ण देवसरे

www.kissekahani.com

(3)

कुलीके साथ चुन्नू प्लेटफार्मपर आ गया। गाड़ी आनेमें अभी थोड़ी देर थी। कुलीने बताया कि लाइन क्लियर होनेका संकेत दिया जा चुका है। फिर भी गाड़ी आनेमें बीस-पच्चीस मिनिट बाकी हैं। चन्नू वहीं खड़ा रहा और चंदनका इंतजार करने लगा।

थोड़ी देर बाद चंदन आ गया। वह टिकट लेने गया था। खिड़कीपर लाइन लगानी पड़ी थी और उसका नंबर आनेपर टिकट मिला। इसी लिए थोड़ीसी देर हो गई। कुछ क्षणोंमें ही टन-टन घंटी बजी। चंदनने प्लेटफार्मके एक कोनेकी तरफ देखकर कहा, "तैयार हो जाओ, गाड़ी आने वाली है।"

"तुम्हें कैसे मालूम?" चन्नूने पूछा।

"पहली बात तो यह कि अभी बजने वाली घंटी यही बताती है। इसके अलावा सामने वह देखो एक खंभा लगा है। उसके ऊपर एक हाथ-सा झुका हुआ है। यह सिगनल कहलाता है। जब यह नीचे झुका हो, तो गाड़ी प्लेटफार्मपर सीधे चली आती है। लेकिन यदि उठा हो, तो ड्राइवर गाड़ी रोक देता है। जब तक यह झुकेगा नहीं, गाड़ी आगे नहीं बढ सकती।"

"पर अंधेरी रातमें यह कैसे दिखता होगा?" चुन्नूने कौतूहल-भरी नजरोंसे देखकर पूछा।

"रातमें इनमें लाल-हरी बत्तियां जलती हैं। हाथ झुकनेपर हरी बत्ती दिखती है और लाइन क्लियर होनेका संकेत मिलता है। किंतु हाथ उठा होनेपर लाल बत्ती जलती है और खतरेकी सूचना देती है।"

बातोंके दौरान धड़-धड़ करती रेलगाड़ी आती नजर पड़ी। सारे प्लेटफार्मके मुसाफिर फुर्तीसे उसपर चढ़नेके लिए तैयार हो गए। चुन्नू और चंदनने भी अपना सामान संभाला। जब गाड़ीका इंजन चन्नूके सामनेसे गुजरा, तो वह घबरा गया। लेकिन चंदनने संभाल लिया।

बहुतसे मुसाफिर उतरे और चढ़े। धक्कम-धक्का और रेल-पेल भी खूब हुई। चंदन चुपचाप चुन्नूको साथ लिये कम भीड़वाले डिब्बेकी तलाशमें घूमने लगा। वह बोला, "इस तरहकी धक्कम-धुक्कासे न तो चढ़ने वाले ठीकसे चढ़ पाते हैं और न उतरने वाले उतर पाते। दोनोंको परेशानी होती है। अगर थोड़े सब्रसे दोनों काम लें, तो सभी बड़ी आसानीसे चढ़-उतर सकते हैं।"

पीछेकी तरफ डिब्बा खाली था। दोनों उसीमें बैठ गए। गाड़ीकी सीटी बजी और वह चल दी। चुन्नूको किसी कविताकी लाइनें याद आ रही थीं—

'छुक-छुक करती आई रेल,
धुआं उड़ाती जाए रेल।'

रेलगाड़ीकी रफ्तार तेज हो गई। चुन्नू रेलगाड़ीके डिब्बोंमें लिखे वाक्य पढ़ रहा था। चंदनने बताया : "जो लाल जंजीर लगी है, इसे खतरेके वक्त खींचनेसे गाड़ी एकदम रुक जाती है। किंतु यदि यों ही कोई खींच दे, तो उसे जुर्माने या जेलकी सजा हो सकती है। इसी तरह सामने कांचके अंदर लगे कागजपर भी कुछ जरूरी सूचनाएं छपी हैं। इन्हें भी ध्यानमें रखना चाहिए। ये सारी बातें मुसाफिरोंकी सुख-सुविधाके लिए ही लिखी हैं।"

चुन्नू एक क्षण तक उन सारी बातोंके बारेमें सोचता रहा। आज रेलगाड़ीमें सफर करनेका एक सुंदर तरीका है। लेकिन एक जमाना ऐसा भी

रहा होगा जब रेलगाड़ी में सफर करनेसे लोग डरते रहे होंगे।

चंदनने बात फिर शुरू की : "चुन्नू, एक लड़केका नाम जेम्स वॉट था। एक दिन वह घरकी रसोईमें बैठा था। अंगीठीपर चायकी केतली चढ़ी थी। वॉट उस समय अकेला ही बैठा था। उसने देखा कि केतलीका पानी खौलने लगा है और भाप टोंटीसे निकल रही है। केतलीका ढकना भी उछल रहा था। वॉटने सोचा कि अगर केतलीका मुंह बंद कर दूं, तो फिर कैसे भाप निकलेगी! बस, उसने टोंटीमें लकड़ीका टुकड़ा लगा दिया। ढक्कन और जोरसे उछलने लगा। फिर उसने ढक्कनको भी दबाया। लेकिन भाप और जोरसे निकलनेको जोर लगाने लगी। इस तरह वॉट बड़ी देर तक भापकी ताकतको देखते रहा। इसी बीच उसकी मां आ गई। वॉटको इस तरह खिलवाड़ करते देखकर उन्हें बहुत गुस्सा आया और उसने वॉटको डांटकर भगा दिया।"

"ठीक किया, वरना कहीं जल जाता, तो?" चुन्नूने कहा।

"हां यह तो ठीक है," चंदनने समझाते हुए कहा। "लेकिन इससे एक महत्वपूर्ण बात यह हुई कि जेम्स वॉटके मनमें भापकी ताकतका उपयोग करनेकी धुन सवार हो गई। जब वह बड़ा हुआ, तो उसने भापसे चलने वाला एक इंजन बनाया। यही इंजन आगे चलकर रेलगाड़ीके जन्मका कारण बना।"

"तो, भैया, तुम मुझे रेलगाड़ीके जन्मकी कहानी सुना रहे थे!" चुन्नू खुश होकर बोला।

"हां।"

"फिर क्या हुआ?" चुन्नू जरा नजदीक खिसक आया।

"इसके बाद फ्रांसके कगनट नामक इंजीनियरने एक ऐसा इंजन बनाया, जो डिब्बोंको खींचता था। संसारकी यही पहली रेलगाड़ी थी और यह सन् १७७० में बनी थी।

"जब यह रेलगाड़ी बनी, तो इसमें सबसे पहले चार आदमियोंने बैठकर पेरिस नगरकी सैर की थी। उस समय इसकी चाल केवल तीन मील प्रति घंटा थी। लेकिन कगनटकी इस रेलगाड़ीका बहुत विरोध हुआ। पढ़े-लिखे लोगोंने भी इसे जादू समझा। कुछ लोगोंने सोचा, शायद वह भूत-प्रेत या राक्षस है। कुछ लोग कहते कि उसके अंदर काली माई रहती है और जब चलती है, तो आदमीकी बलि चढ़ाई जाती है। इस तरहकी अफवाहों और विरोधके कारण कगनटको रेलगाड़ीको बनानेके लिए बजाय इनाम मिलनेके जेलमें बंद कर दिया गया।

"लेकिन अब वह काम रुकने वाला तो था नहीं। चौदह साल बाद इंग्लैण्डके मरडक नामक

आकर्षक सौन्दर्य

अफगान क्रीम केक

श्रृंगार की सम्पूर्ण सामग्री है जिसमें आपके रूप को आकर्षक बनाने के लिए क्रीम तथा पावडर दोनों का एक में सम्मिश्रण है ।

इस सुविधापूर्ण कम्पेक्ट में कम्प्रेस किया हुआ पावडर है जो प्रत्येक नारी के लिए आवश्यक है विशेष तौर पर कर्मचारी महिलाओं के लिए । यह पर्स में ले जाने के लिए सुविधाजनक है व इस्तेमाल का तरीका भी सुगम है ।

अफगान स्नो

सौन्दर्य प्रसाधन

ई. एस. पाटनवाला, बम्बई-७७

इंजीनियरने एक रेलगाड़ीका इंजन बनाया। पर जब वह अपना इंजन टेस्ट करनेके लिए सड़क पर लाया, तो लोग उसे देखकर भागे। उन्होंने समझा कोई दैत्य आ रहा है। मरडकको डरके कारण अपना इंजन वापस ले जाना पड़ा कि कहीं पुलिसमें रिपोर्ट न कर दी जाए और वह मुसीबतमें न पड़ जाए। मरडकका एक शिष्य था—ट्रैवेथिक। वह हिम्मत नहीं हारा। उसने काम जारी रखा और सन् १८०४ में उसने एक ऐसी रेलगाड़ी बनाई, जिसमें आठ आदमी चल सकते थे। यह पांच मील प्रति घंटेके हिसाबसे चल सकती थी।

"धीरे धीरे लोगोंने रेलगाड़ीके बारेमें जाना। लेकिन वे इसमें बड़े आरामसे सफर करना चाहते थे। इसलिए ऐसी आरामवाली रेलगाड़ी बनाने के लिए जार्ज स्टीफेंसन नामक इंजीनियर आगे आया। उसने जो रेलगाड़ी बनाई, वह अधिक डिब्बों और मुसाफिरोंको खींच सकती थी। उसके डिब्बे भी बहुत आरामसे बैठने योग्य बने थे।"

"भैया, इसे रेलगाड़ी क्यों कहते हैं? इंजनगाड़ी क्यों नहीं कहते?" चुन्नने प्रश्न किया।

"असलमें ये गाड़ियां लोहेकी पटरियोंपर चलती हैं, जिन्हें अंग्रेजीमें रेल कहते हैं। इसलिए उन पर चलने वाली गाड़ीका नाम रेलगाड़ी पड़ गया। अब तो बिजलीसे भी रेलगाड़ी चलने लगी है। इनमें लोग यात्रा ही नहीं करते, बल्कि भारी सामान भी ढोया जाता है। विदेशोंमें तो कई जगह जमीनके अंदर रेलगाड़ियां चलती हैं।"

गाड़ीकी गति धीमी हो गई थी। स्टेशन आने वाला था। चंदन और चुन्नने अपना सामान संभाल लिया। जैसे ही गाड़ी प्लेटफार्मपर रुकी, मुसाफिर उतरने लगे। प्लेटफार्मसे बाहर निकलने-के पहले फाटकपर खड़े टिकट बाबूको चंदन-ने टिकट दिया और बाहर निकल आए।

बाहर कई रिक्शेवाले खड़े थे। चंदन रिक्शे वालेसे पैसे तय करने लगा। इसी बीच एक हवाई जहाज घरघराता हुआ ऊपरसे निकल गया। चुन्न भौंचक्का होकर उसे देखने लगा। इतने नीचे उड़ते हुए हवाई जहाजको उसने पहली बार देखा था।

तभी चंदनने उसे रिक्शेपर बैठनेके लिए बुलाया। चुन्न चुपचाप बैठ गया। वह सोचने लगा कि कितना अच्छा हो अगर यह रिक्शा हमें हवाई अड्डेपर ले चले। (क्रमशः)

फोटो : वीरेन्द्र सेनी

काकी चिड़िया घर में

'अरे बुलाकी!'
'हां री, काकी!'
'मैं-ना मैं-ना गाती मैना,
अपना नाम बताती मैना!'
'हां ऐसा!'
'ला पैसा!'

'अरे बुलाकी!'
'हां री, काकी!'
'वह प्याले-सी अंखियों वाला,
घूर रहा घुग्घू मतवाला!'
'हां ऐसा!'
'ला पैसा!'

'अरे बुलाकी!'
'हां री, काकी!'
'पूंछ किरणसी प्यारी प्यारी,
सिरपर किरण-मुकुट,बलिहारी!'
'हां ऐसा!'
'ला पैसा!'

'अरे बुलाकी!'
हां री, 'काकी!'
'काकातुआ— विदेशी सुआ,
चिल्ला रहा—हुआ क्या हुआ!'
'हां ऐसा!'
'ला पैसा!'

'अरे बुलाकी!'
'हां री, काकी!'
'गर्दन टांगें ऊंट समान,
सूरत में मुर्गा-सा जान!'
'हां ऐसा!'
'ला पैसा!'

'कलको बाकी!'
'अच्छा काकी!'

—विद्याभूषण विभु

(पक्षियोंके नाम : मैना, घुग्घू, मोर, काकातुआ, गुटुरगूं)

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई अंकोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

नटखट बन्नू

नकली दाढ़ी-मूंछ लगाए,
सिर पर बांधे साफा,
लंबा कुर्ता पहने बन्नू,
बनकर निकला 'पापा'!

आते ही डांटा अम्मी को :
"जल्द बनाओ खाना ;
बहुत काम है, मुझ को फौरन
दफ्तर में है जाना!"

इसी बीच आते दफ्तर से,
पापा पड़े दिखाई।
घुसे दौड़ बन्नू जी घर में,
हो ना जाए पिटाई!

—नारायणप्रसाद अग्रवाल

बिल्ली का इलाज

घर में दुबकी बिल्ली कपटी,
चूहे पर जैसे ही झपटी;

मोती कुत्ते ने ललकारा,
और खींच कर चांटा मारा!

चूहों को मिल गया स्वराज,
बिल्ली का हो गया इलाज!

—कुमारी इंद्रा

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627396
mshahid.shahid786@gmail.com

ऊंट की लात

लाए थे इक ऊंट खोजकर
मेरे बिरजू मामा।
उसके लिए सिला कर लाए,
बहुत बड़ा पाजामा!

लगे पिन्हाने जल्दी जल्दी,
उसके पैर उठाकर;
मारी लात, गिरे मामा जी,
सात कोसपर जाकर!

—मंगरूराम मिश्र

मिस्टर बंदर

मिस्टर बंदर सूट पहन कर,
निकल करने सैर।
शान मारते, डींग हांकते,
सब से बांधा बैर।

चाट उड़ाई, केला खाया,
इसको-उसको मुंह बिचकाया!
किंतु मदारी को जब देखा,
तब तो दिल उनका घबराया।

मिस्टर बंदर भागे डर कर,
रख कर सिर पर पैर!
कभी नहीं फिर सूट पहन कर,
निकल करने सैर!

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

टिनोपाल से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है!

आखिरी बार कपड़े खंगालते समय बस ज़रा-सा टिनोपाल मिलाइए, फिर देखिए, आपके सफ़ेद कपड़ों में कैसी चमत्कार सफ़ेदी आ जाती है। शर्टस, साड़ियाँ, तौलिये, चादरें, सभी कपड़े और भी अधिक सफ़ेद हो उठते हैं।

और इस अधिक सफ़ेदी के लिए आपको खर्च? प्रति रुपया पूरा एक पैसा भी नहीं! एक चौथाई लीटर चम्मच भर टिनोपाल बाल्टीभर कपड़ों को अधिक सफ़ेद करने के लिए काफ़ी है।

वैज्ञानिक विधि से बनाया गया यह ब्लू-ब्रटनर, टिनोपाल हमेशा इस्तेमाल कीजिए। यह नसों को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाता।

टिनोपाल अब मुहरबन्द एल्युमिनियम फॉइल पैकेट में भी मिलता है।

एक पैकेट बाल्टी भर कपड़ों को अधिक सफ़ेद करता है। इस्तेमाल करने में आसान, इस पैकेट से न कोई फ़ज़ूलखर्ची होती है, न कोई झंझट।

टिनोपाल जी. डार. गाइगी एस. ए. बाज़ हिन्दुस्तान लेवर का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

हिंद गाइगी लिमिटेड, पी. ओ. बॉक्स ९६५, बम्बई ४०० ००१ बी.आर

Shilpi SG. 327 Asia

लुत्फ़
(
भरा हो? रेतके
रफ़ूचक्कर हो
बाहरस
गुस्सा आया
किया मुंह पर
दरवाजेके करीब
आती रोशनीमें
असली है यानी
भूखे तो थे
थोड़ा-सा कतरा,
मुंहमें भर लिया
लाल मिर्चें
पानी' करते हुए
साली साहि
पानीका गिलास
गए। हालत कुछ
भूक रहा था।
साली साहिब
आ खड़ी हुई :
मिठाई है।"
"नहीं, ले जा
जानता, तो आ
तमकर बोले
"जीजाजी,
तो यही होता
खा लो। मुंहका
डरते डरते
गुस्सा मनका
देर बाद तो हद
पीकर अपनी
पर जैसे ही पसरे
गिर पड़े। सारे
आई। खोपड़ी
बस, दिमाग
ज्जती . . .
किया कि बगट
ससुरालसे
लिया। मांने
लुत्फ़न्नी, अकेला
"जहन्नुममें!

लुत्फन्नीलाल की होली

(पृष्ठ ११ से आगे)

भरा हो? रेतके लड्डू खाकर ही उनकी हिम्मत रफूचक्कर हो गई थी।

बाहरसे खिलखिलाहटकी आवाज आई। गुस्सा आया उन्हें, तो तश्तरी उठा ली। तय किया मुंह पर दे मारेंगे साली साहिबाके। दरवाजेके करीब पहुंचे, तो किवाड़की फाकसे आती रोशनीमें उन्होंने देखा कि समोसा एकदम असली है यानी एकदम गरम गरम।

भूखे तो थे ही, लार टपक पड़ी। डरते डरते थोड़ा-सा कतरा, मजा आ गया। फिर क्या था, मुंहमें भर लिया।

लाल मिर्चें भरी थी उसमें। चीख उठे। 'पानी पानी' करते हुए बाहर भागे।

साली साहिबा इंतजारमें ही थीं। झटसे पानीका गिलास आगे बढ़ा दिया। गटागट पी गए। हालत कुछ कुछ सुधरी। आंख-नाकसे पानी टपक रहा था।

साली साहिबा मिठाईकी तश्तरी लिये कमरेमें आ खड़ी हुईं: "लीजिए, जीजाजी, यह असली मिठाई है।"

"नहीं, ले जाओ। अब बहुत हो चुका। मैं जानता, तो आता ही नहीं," रुआंसे होते हुए भी तमककर बोले।

"जीजाजी, नाराज हो गए . . . होली पर तो यही होता है, कोई नई बात थोड़े है। लो, खा लो। मुंहका जायका बदल जाएगा।"

डरते डरते खाया। फिर चटखारे लेने लगे।

गुस्सा मनका मिट गया था। लेकिन थोड़ी देर बाद तो हद ही हो गई। लुत्फन्नीलाल खा-पीकर अपनी आदतसे मजबूर होकर चारपाई पर जैसे ही पसरे कि 'धम'की आवाजके साथ नीचे गिर पड़े। सारी दुनिया घूमती हुई उन्हें नजर आई। खोपड़ी भन्ना उठी दर्दके मारे।

बस, दिमाग ही तो फिर गया। इतनी बेइज्जती . . . पलक झपकतेमें न जाने क्या तय किया कि बगटुट भाग खड़े हुए।

ससुरालसे भागे, तो सीधे घर आकर ही दम लिया। मांने सवालकी बंदूक दागी: "क्यों रे, लुत्फन्नी, अकेला ही आया, बहू कहां है?"

"जहन्नुममें!" लुत्फन्नीने लाल होकर कहा। ●

खोजो तो जानें

धर्मग्रन्थोंके नाम :

(१) मेरी बहन संगीता बहुत चंचल है।
(२) चीनने महाभारतकी पुनरावृत्ति की है।
(३) मियां शकुरा न शरीफ हैं न बदमाश।
(४) चुइंगम चबाई, बिल चुकाया; हिसाब बराबर।
(५) यह ग्रंथ साहिबसिंह भाई का है।

भारतीय फूलोंके नाम :

(१) गुलाबरायकी हालत चिंताजनक है।
(२) मन्ना मोहनसे कम लड्डू नहीं लेता।
(३) गोपीकृष्ण नाचमें लीन हो जाता है।
(४) कल नानकने रमेशको मारा था।
(५) कम्मो गरारा पहनती है।

प्रार्थना-स्थलोंके नाम :

(१) रातको उसने दियेकी लौ मंद रखी थी।
(२) हम ठण्डमें गर्म कपड़े पहनते हैं।
(३) यह स्थान 'कम्पनी बाग' में ही है।
(४) शिक्षा और ज्ञान गुरु द्वारा प्राप्त होते हैं।
(५) जरा-सी भूलसे आज मैं गिर जाता।

रिश्तोंके नाम :

(१) रमा, मास्टर साहबसे 'पराग' तो ला।
(२) मिला न ऐसा रामा मीत, दुःख में भी जो राखे प्रीत।
(३) न यह छाता ऊधोका है न माधो का।
(४) कुछ स्कूलोंमें सूत-कताई अनिवार्य है।
(५) खेतोंमें बुआई शुरू हो गई है।

—शांतिलाल अग्रवाल

उत्तर

प्रार्थना-स्थलोंके नाम : (१) दीया (२) महाभारत (३) कुरानशरीफ (४) बाइबिल (५) मन्त्र मांगिए।

भारतीय फूलों के नाम : (१) गेंदा (२) कमल (३) चमेली (४) कनेर (५) मोगरा।

मार्गदर्शक स्थलों के नाम : (१) मन्दर (२) मठ (३) स्थानक (४) गुरुद्वारा (५) गिरजा।

रिश्तों के नाम : (१) मामा (२) मीता (३) नाक (४) नाई (५) बुआ।

मनपर्याय ज्ञान (टेलीपेथी)

— अरुणकुमार

बच्चो, इस अद्भुत खेलके द्वारा हम तुम्हें एक जादूगर बनाने जा रहे हैं। जादू भी छोटा-मोटा नहीं है, दूसरेके मनकी बात बतानेका जादू है। लेकिन इसे वही बच्चा अच्छी तरह कर सकता है, जो पढ़ाई-लिखाईमें भी तेज हो और अपनी बुद्धिसे भी काम लेना जानता हो। अगर तुम अपने आपको ऐसे बच्चोंमें शुमार करते हो, तो तैयार हो जाओ और अपने ही जैसा एक मित्र खोज लो, जिसके साथ तुम इस अद्भुत खेलके रहस्यको बांट सकते हो। इन दोके अलावा तीसरे को इस खेलके भेदका पता नहीं लगना चाहिए।

खेल क्या है ?

खेल यह है कि तुम बातों बातोंमें अपने किसी मित्रसे यह चर्चा करते हो कि पुराने जमानेमें ऐसे ऐसे गुणी लोग होते थे, जो एक-दूसरेके मन की बात दूर बैठे जान लेते थे। आजकल लोगोंके मन शुद्ध नहीं रहे, इसलिए मनका वह गुण प्रकट नहीं होता. . . आदि आदि। फिर बातचीतके दौरान तुम अचानक कहो कि तुम एक ऐसे लड़के को जानते हो, जो कमसे कम मेरे देखे - सोचे हुए ताशके पत्तेको सही सही बता देता है। बस, एक निशानी उसे देनेकी जरूरत होती है। न लिखत न पढ़त, न बात न चीत। उसे जाकर यह बताना कि यह निशानी मेरी दी हुई है। उस निशानीपर ध्यान लगाकर वह अपने मनको मेरे मनके साथ जोड़ लेगा और उसे पता लग जाएगा कि मैंने क्या पत्ता देखा या सोचा है।

इसपर तुम्हारा मित्र उस लड़केकी परीक्षा लेना चाहेगा। तुम पहले तो आनाकानी करते हो कि इस तरहके काममें मनपर बहुत जोर पड़ता है, खून सूखता है—वगैरा वगैरा। फिर अपने मित्रकी बहुत जिदपर तुम तैयार हो जाते हो और उससे कहते हो कि वह या तो ताशमेंसे कोई भी पत्ता निकालकर तुम्हें दिखा दे या अपना सोचा हुआ पत्ता तुम्हें बता दे। निशानीको माथेसे लगा कर तुम अपने मित्रको दे देते हो। वह फौरन तुम्हारे उस ज्ञानी लड़केके पास पहुंचकर निशानी उसे दे देता है। वह भी उसपर एक मिनिट तक ध्यान लगाता है और फिर ऐसा जताता है मानो उसे आकाशकी ओरसे कोई अतर्ज्ञान हुआ हो। अब वह कागजपर चुपकेसे पत्ता लिखकर बता देता है।

जादू क्या है ?

अपने मित्रसे कहो कि वह अपने ही हाथसे करीब तीन इंच चौड़ा और इतना ही लंबा एक कोरा कागज पुड़ियाके लिए फाड़ ले। उसपर उससे हल्दी, चूना, रोली या गेरूसे—जिस भी रंगका पत्ता हो—सतिया बनानेके लिए कहो। हल्दी हुकुमके लिए, चूना चिड़ीके लिए, रोली पानके लिए और गेरू ईंटके लिए। अगर उससे सतिया बनाना न आता

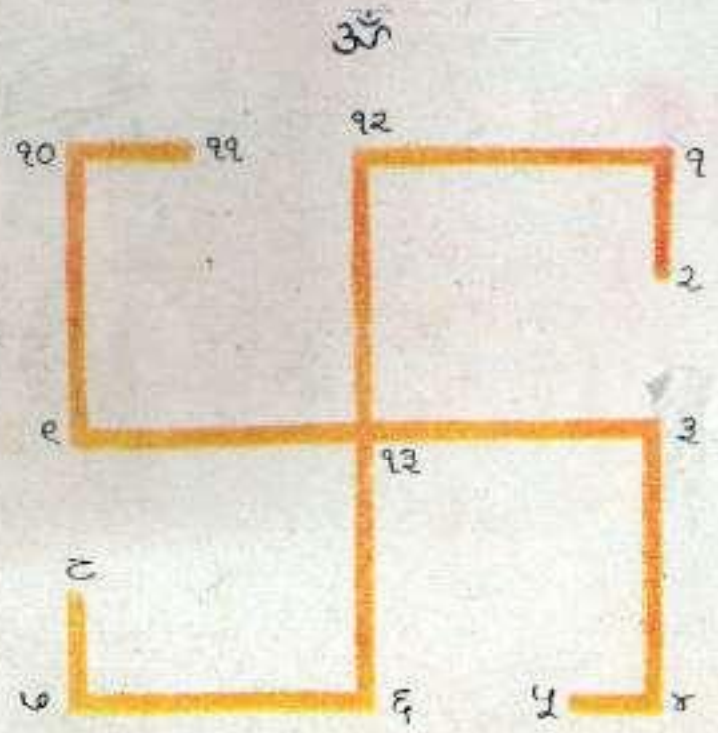

हो, तो स्वयं बना दो, जैसा दिया हुआ है।

ध्यान रखो कि उसे या तुम्हें सतियेपर नंबर नहीं लिखने हैं, जैसा कि यहां दिखाया गया है, और जहां बारहकी संख्या मानी गई है उसके ऊपर 'ॐ' या 'श्री' में से कोई शब्द अवश्य लिखना है, जिससे यह मालूम हो कि सतिया किधरसे सीधा है।

तुम इसे एक घड़ीका डायल समझ सकते हो। प्रत्येक संख्या उसी क्रमसे दी हुई है, जिस क्रमसे घड़ीपर घंटोंके अंक होते हैं।

अब एक सूईमें कच्चा लाल धागा पिरो लो और उसे पहले १३ की संख्यावाले केंद्रसे निकाल लो। फिर जो पत्ता तुम्हारे मित्रने सोचा है उसीके अंकवाले सतियेके मोड़पर दुबारा सूई निकालो

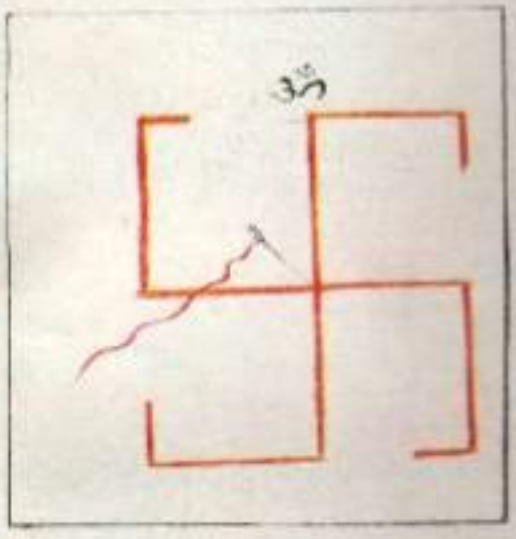

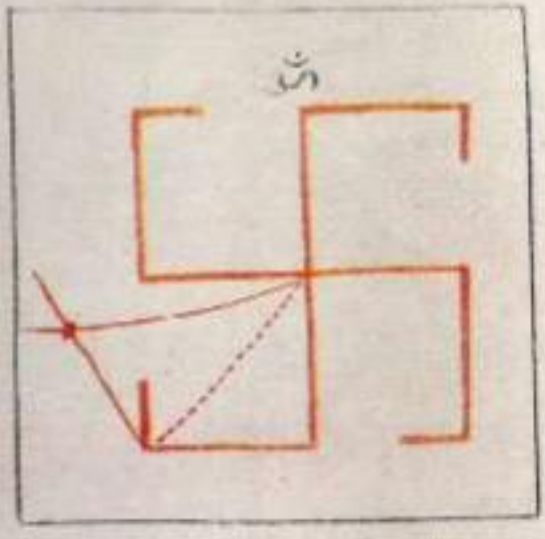

और धागेके दोनों सिर अपसमें बांध दो, जैसा कि दो छोटे सतियोंमें दिखाया गया है। मान लो उसने हुकुमका पत्ता सोचा है। हल्दीसे बने सतियेको देखते ही तुम्हारे दूर बैठे ज्ञानी मित्रको पता चल जाएगा कि पत्ता हुकुमका है। इसके बाद सतिये में पिरे हुए धागेको देखनेसे और घड़ीके डायलका स्मरण करनेसे उसे यह मालूम हो जाएगा कि पत्ता कौनसा है।

गुलामके लिए ११, बेगमके लिए १२ और बादशाहके लिए १३ की संख्या मानी जाएगी। लेकिन अगर तुम्हारे मित्रने बादशाह सोचा है, तो सूईको दोबारा कागजके किसी स्थानसे निकालनेकी आवश्यकता नहीं है। दोनों तरफसे सिरे 'ॐ' या 'श्री' की ओर कागजके बाहर ले जाकर बांध दो।

अब तो तुम समझ गए होगे कि तुम्हें हल्दी, चूना, रोली और गेरू ये चार चीजें चार पुड़ियाओं में, एक मोटी सूई तथा थोड़ेसे लाल रंगे हुए कच्चे धागे अपने खिलौनोंके डिब्बेमें रखने हैं। अपने मित्रको यह पता न लगने दो कि तुम्हारे पास बाकी तीन चीजें और हैं, जिनसे तुम सतिया बनवाते हो। वह तुम्हें पहले पत्ता बता देता है। उसके अनुसार तुम्हें अपने खिलौनोंके डिब्बेसे वही चीज निकालकर लानी है, जो उस पत्तेको बतानेके लिए जरूरी है। तुम क्या क्या किया करने वाले हो यह भी पहले नहीं बताना है। जैसे जैसे तुम किया करते जाओगे, वैसे वैसे तुम्हारे मित्रको ऐसा मालूम होगा मानो कोई अत्यंत पवित्र धार्मिक अनुष्ठान हो रहा हो। सिवा धागा पिरोनेके, जहां तक हो हर क्रिया अपने मित्रसे ही कराओ और सतिया उसे अलग बनाकर दिखा दो।

यह भी बराबर ध्यान रखनेकी बात है कि सतियेकी हर रेखा ऊपरकी ओर या सीधी ओर जाती है, नीचेकी ओर या बायीं ओर नहीं।

इस जादूको दिखानेमें किसी काममें जल्दी न करके, धैर्यके साथ करना चाहिए और बीच बीच में अपने दूर बैठे ज्ञानी मित्रकी अद्भुत शक्ति के बारेमें बातें करके अपने पास बैठे मित्रका ध्यान बंटाए रखना चाहिए। यह भी याद रखो कि दूर बैठा मित्र एकदम तुम्हारी कक्षामें या आसपास न हो। पत्ता पूछनेके लिए तुम्हारे मित्रको उस तक पहुंचनेके लिए काफी दूर जाना चाहिए---इससे उसकी उत्सुकता भी बढ़ेगी और तुम्हारे खेलका असर अच्छा होगा। ●

बूझने वाली पहेलियां (पृष्ठ ३९ से आगे)

यान देखे हों, तो तुम तुरंत ही पहचान जाओगे कि यह तो 'मकई का भुट्टा है'। वह ऐसे लगता है जैसे लड़का पेटमें हो और दाढ़ी हवामें उड़ रही है।

अच्छा बताओ यह क्या है—

'छोटेसे छोटकदास, कपड़े पहिरे सौ-पचास।'

क्या कहा—'प्याज?' बिलकुल ठीक; यह देखनेमें तो छोटा होता है लेकिन छिलकेपर छिलके पहने होता है।

और यह क्या है—

'नीचे उजली ऊपर हरी, खड़ी खेतमें उल्टी परी।'

बड़ा गड़बड़ हो गया, खुले खेतमें कोई उल्टी भी खड़ी होती है और वह भी परी। जिसका हरा फ्राक ऊपर हो और गौर वर्ण उजली देह नीचे। चौंकिए नहीं, यह तो 'मूली है मूली'। जिसकेआगे समस्त पहेलियां किस खेतकी मूली है!

अच्छा तो अंतमें एक बात और बताइए। बताइए यह क्या है —

'यह गई, वह आई।'

चारों और दृष्टि घुमाइए। खोजिए। प्रयत्न कीजिए। जी हां, यह 'दृष्टि' है। अपनी अपनी दृष्टि है और यह तो आपकी दृष्टि है। जी हां, देखिए—'यह गई, वह आई'। ●

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९५६ के ८ वें नियम (संशोधित) से संबंधित प्रेस और पुस्तक पंजीयन अधिनियम की धारा १९–डी की उपधारा (बी) के अन्तर्गत अपेक्षित बम्बई के 'पराग' नामक समाचारपत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्योरा :

प्रपत्र चतुर्थ

(देखो नियम ८)

१–प्रकाशनका स्थान :	दि टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, दि टाइम्स आफ इण्डिया बिल्डिंग, डा. दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई–१।
२–प्रकाशनकी आवर्तिता :	मासिक।
३–मुद्रकका नाम :	श्री प्यारेलाल साहू, स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिए।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	रहमत मंजिल, दूसरा महला, फ्लैट नं. ८, ७५ वीर नरीमान रोड, बम्बई–१।
४–प्रकाशकका नाम :	श्री प्यारेलाल साहू, स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिए।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	रहमत मंजिल, दूसरा महला, फ्लैट नं. ८, ७५ वीर नरीमान रोड, बम्बई–१।
५–संपादकका नाम :	श्री आनंदप्रकाश जैन।
राष्ट्रीयता :	भारतीय।
पता :	फ्लैट नं. १०, नरुल्ला बिल्डिंग, कंवारी कालोनी, २१ वीं रोड, चेम्बूर, बम्बई–७१।

शेयर होल्डर्स

६–उन व्यक्तियोंके नाम और पते जो समाचारपत्रके स्वामी और भागीदार हैं या कुल पूंजीके एक प्रतिशत से अधिकके शेयर-होल्डर हैं :	१—भारत निधि लिमिटेड, ११ क्लाइव रो, कलकत्ता–१। २—मेसर्स साहू जैन लिमिटेड, ११ क्लाइव रो, कलकत्ता–१। ३—दि जयपुर उद्योग लिमिटेड, सवाई माधोपुर (राजस्थान)। ४—मेसर्स सोन वैली पोर्टलैण्ड सीमेंट कम्पनी लिमिटेड, ११ क्लाइव रो, कलकत्ता–१। ५—इलाहाबाद बैंक नामिनीज लिमिटेड, १४ इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१। ६—श्री अशोक कुमार जैन, ११ क्लाइव रो, कलकत्ता–१। ७—अशोक विनियोग लिमिटेड, १ बी, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

मैं, प्यारेलाल साहू, घोषित करता हूं कि मेरी जानकारीके अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

प्यारेलाल साहू

(प्रकाशकके हस्ताक्षर)

तारीख : १ मार्च १९६६

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४७

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मार्च तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हे स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एक-से सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पुतियां भेजने का पता : **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४७), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई– १।**

यहां से काटो

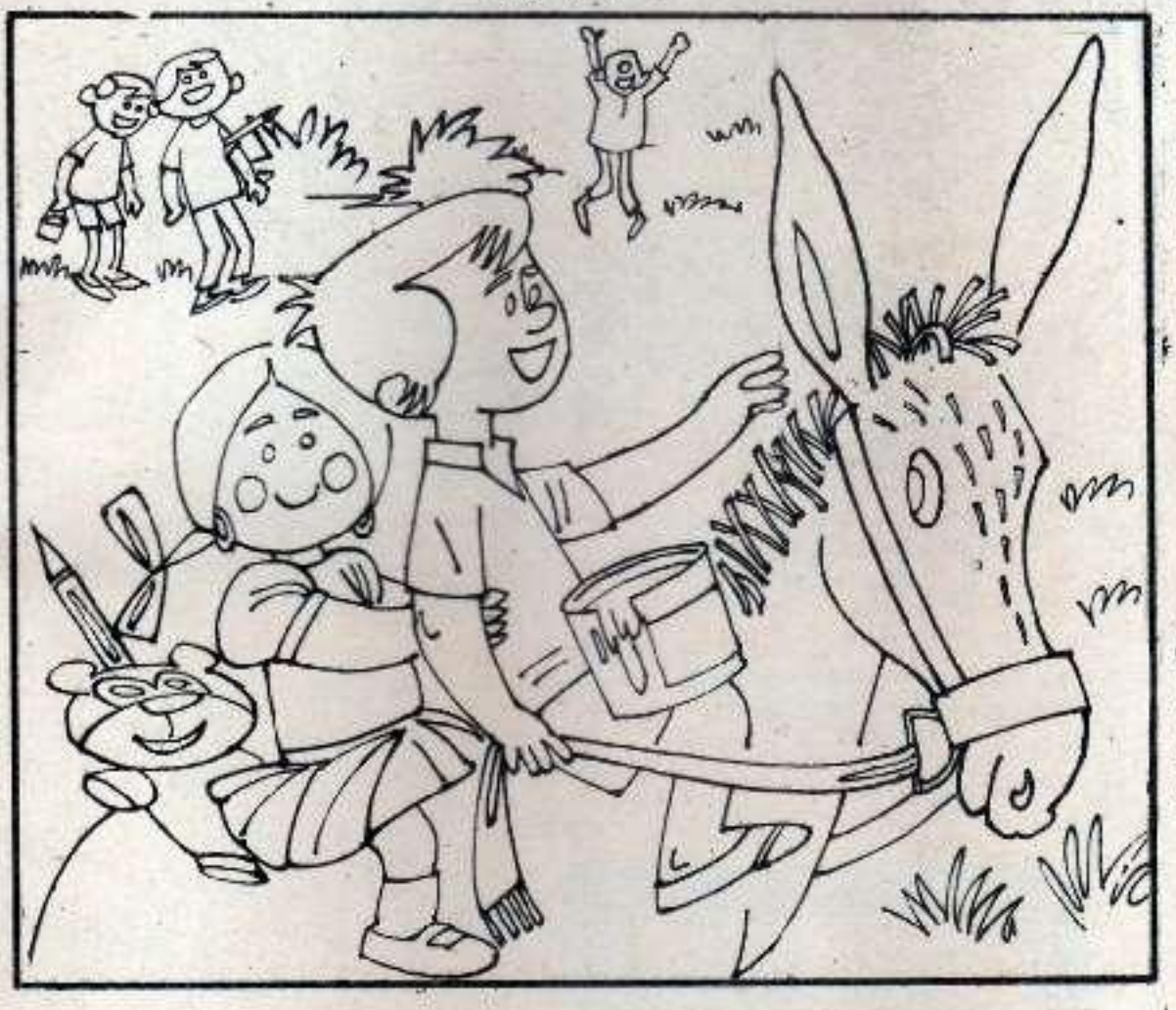

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन
'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४७

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

रहस्य! विस्मय! साहस!

महाबली बेताल उस खूंखार गुरिल्ले की तलाश में जाता है जिसने जंगल के गांवों में आतंक मचा रखा है। बेताल का भूखे सिंहों से डटकर संघर्ष होता है और जैसे ही वह लड़खड़ाकर गिरने को होता है, वैसे ही मौके पर विशालकाय गुरिल्ला प्रकट हो जाता है। बेताल की अब कैसे रक्षा होती है? यह रोमांचकारी कहानी 'इंद्रजाल कॉमिक्स' के फरवरी अंक में पढ़िये।

इंद्रजाल कॉमिक्स

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

सभी न्यूज-एजेन्टों और पुस्तक-विक्रेताओं से हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल और बंगला में उपलब्ध।

मूल्य : ६० पैसे

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४४ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४४ में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां छापा जा रहा है। पुरस्कार-विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **अंबाजी विठोबा चिव्याल, घर नं. १-३-८४२ कवाड़ी गुडा, सिकंदराबाद (आंध्र प्रदेश)।**
- **सुनिल कुमार चीमन भाई मेवाड़ा, अमबा प्रभुदासकी चाल, पिलाजीगंज, मेहसाना (उ. गु.)।**
- **अमेशकुमार सुपुत्र हरकिशनलाल, कैंके मेट्रो, हैदराबाद–२० (आंध्र प्रदेश)।**

यहां छपे दोनों चित्रोंमें दोनों प्रतियोगियोंने ही रंगोंके चुनाव करने और भरनेमें काफी सावधानीसे काम लिया, जिसके कारण चित्रोंकी पृष्ठ-भूमि काफी सजीव हो उठी है।

लेकिन नीचेके चित्रमें सुनिलकुमारने बालककी आंखोंमें क्रोध और बालिकाकी आंखोंमें भय और विस्मयका जो भाव झलकाया है, वह उसकी पैनी सूझबूझका पता देता है।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमें दिलीपकुमार सिंह, सबौर (जिला भागलपुर); रामगोपाल गुप्त, लखनऊ; प्रवीणनन्द नौटियाल, देहरादून; कांतिलाल विश्वकर्मा, भिलाई नगर; सुरेशकुमार, भिलाई-२; रविप्रकाश अग्रवाल, मेरठ; सुभाष शंकर राव हबीब, गुलबर्गा; राजकृष्ण अग्रवाल, वाराणसी; गौरीकुमारी, आरा; नरेंद्रकुमार गुप्ता, कानपुर; विपिनानन्द नौटियाल, देहरादून; अविनाश कुमार श्रीवास्तव, मोतिहारी; श्रीकृष्णकुमार, सीनादा (दार्जिलिंग); वीरेंद्रकुमार शर्मा, दतिया; रसिक बिहारी पारिख, नाथद्वारा; कुमारी दीप्ति अग्रवाल, इलाहाबाद और अजीबकुमार वर्मा, परेल (बम्बई–१२) के प्रयास अच्छे रहे। ●

कोई सूरत नज़र नहीं आती!

सरकार जी गला फाड़ कर हैं चिल्लाये ☐ अम्मां चुप बैठी हैं अपने होंठ दबाये ☐ छोटे चाचा मस्त रहे हैं खर्राटे भर
☐ मोटी रानी आ टपकीं पतले राजा पर ☐ ऊपरवाला साफ़ टमाटर उड़ा रहा है ☐ बचन सिंह गुस्से में आँखें दिखा
रहा है ☐ उसकी टांगें खींच झूलता झूला छोटू ☐ डिब्बे की यह रेल पेल कितनी दमघोंटू ☐ कोई सूरत नज़र नहीं
आती है लेकिन रहें मेल से सभी रेल में तो सब मुमकिन

चाक्षुष रेलवे

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250827395
mshahid.shahid786@gmail.com

बेनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ७, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३/१ और १३/२, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट
लन्दन ऑफिस : ३, अल्बे मार्ले स्ट्रीट, डब्ल्यू १

CIBA REGD. No. MH 468

M. SHAHID
H. No. 813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No. 9250627395
mdshahid786@gmail.com

बिनाका बेबी पावडर, मम्मी प्लीज। मैं एक सुकोमल, मखमल के समान मृदु व दुलार योग्य बेबी बनना चाहती हूं। बच्चे की त्वचा की सुरक्षा के लिए सीबा ने इस पावडर में सर्वाधिक मृदु कीटाणुनाशक ब्राडोसॉल का सम्मिश्रण किया है। मैं भी इसके द्वारा सुरक्षा चाहती हूं, प्लीज।

Binaca

baby powder with a gentle baby-antiseptic